Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024-26, R.N.I. No. 72014/1999 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय

तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.org

आसक्ति

जीव विमासी जोय तूं, विषय म राच गिवार।
थोड़ा सुखां रे कारणे, मूरख घणा म हार।।

हे जीव! तू विचार कर देख, हे मूढ़!
विषय में आसक्त मत बन। थोड़े सुखों
के लिए बहुत सुखों को मत गवां।

–आचार्यश्री भिक्षु

नई दिल्ली ● वर्ष 26 ● अंक 28 ● 14 अप्रैल - 20 अप्रैल, 2025 प्रत्येक सोमवार ● प्रकाशन तिथि : 12-04-2025 ● पेज 12 ₹ 10 रुपये

सत्य का मार्ग है राजपथ के समान : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 02

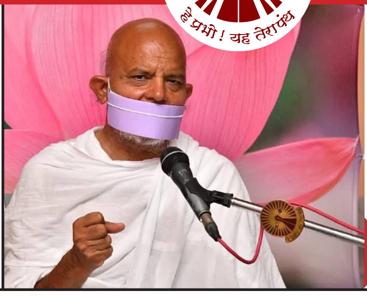

समर्थ शरीर से हो सकती है उत्कृष्ट साधना : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 12

Address Here

प्रभु के पथ पर चलते रहें : आचार्यश्री महाश्रमण

एकादशम भिक्षु के सान्निध्य में मनाया गया 266वां भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस

कोरडा।
6 अप्रैल, 2025

आचार्य भिक्षु के ग्यारहवें पट्टधर शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमणजी सिधाड़ा से लगभग 12 किलोमीटर का विहार कर कोरडा गांव में स्थित सच्चिदानंद विद्यालय में पधारे। पूज्यवर ने भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस पर अमृत देशना देते हुए फरमाया कि 'दसवेआलियं' का दसवां अध्ययन इस दिवस की भावभूमि से जुड़ा हुआ है। आज चैत्र शुक्ला नवमी है, जिसे रामनवमी के साथ-साथ भिक्षु नवमी भी कहा जाता है।

भिक्षु स्वामी तेरापंथ धर्म के आद्य आचार्य हैं। तेरापंथ की स्थापना से पूर्व उन्होंने इसी दिन अभिनिष्क्रमण किया था। 'दसवेआलियं' के दसवें अध्ययन के श्लोकों का समापन 'सभिक्खु-सभिक्खु' शब्दों से होता है, जिसका अर्थ है—'वही है सच्चा भिक्षु'। यह अभिव्यक्ति भिक्षु स्वामी के नाम से

प्रतिध्वनित होती है। अध्ययन के प्रारम्भ में भी निष्क्रमण का उल्लेख है, इसलिए यह दिन 'अभिनिष्क्रमण दिवस' के रूप में विशेष महत्व रखता है।

आचार्य भिक्षु का यह निष्क्रमण मारवाड़ के बगड़ी क्षेत्र से संबंधित था। उन्होंने एक आम्नाय परंपरा से बाहर निकलकर नया अध्यात्मिक मार्ग चुना। 'तेरापंथ' नाम भी एक सहज संयोग से प्राप्त हुआ—जोधपुर के एक गृहस्थ कवि ने रचना करते हुए इस नाम को प्रस्तुत किया। तेरह संत, तेरह श्रावक, तेरह नियम—यह त्रिगुणित तेरहों का अद्भुत संयोग ही इस नाम का आधार बना। जब यह नाम आचार्य भिक्षु तक पहुँचा, उन्होंने पट्ट से उतरते हुए प्रभु महावीर को वंदन कर कहा— 'हे प्रभो! यह तेरापंथ—यह तुम्हारा पंथ है। हम आपके पथ के पथिक हैं।

(शेष पेज 10 पर)

> तेरापंथ धर्मसंघ का 265वाँ वर्ष प्रारंभ हो चुका है। दस आचार्यों का गौरवमयी काल पूर्ण हो चुका है, और अब दूसरा दशक चल रहा है। हम आचार्य भिक्षु को बार-बार श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं और यह प्रार्थना करते हैं कि हमारे भीतर भी क्रांति की वह लौ सदा प्रज्वलित रहे। श्रद्धा, आस्था, आचार-निष्ठा और आगम-श्रद्धा हमारे जीवन का हिस्सा बनें। हमारी संकल्प-शक्ति दृढ़ बनी रहे, यही कामना है।

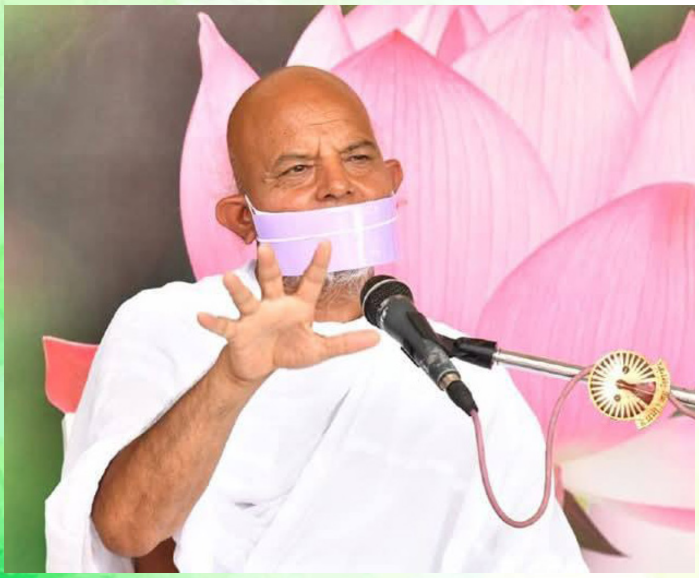

संयम, सदाचार और नैतिकता से युक्त हो जीवन : आचार्यश्री महाश्रमण

फतेहगढ़।
7 अप्रैल, 2025

तीर्थंकर के प्रतिनिधि, संयम स्वराज्य के साधक आचार्यश्री महाश्रमणजी झंडाला के प्राथमिक विद्यालय पधारे। अमृतमयी देशना प्रदान करते हुए पूज्यवर ने फरमाया कि मनुष्य के व्यवहार में धर्म की उपस्थिति होनी चाहिए। जैसे पानी में चीनी मिल जाए तो उसका स्वाद मधुर हो जाता है और यदि उसमें नमक मिल जाए तो वह खारा हो जाता है—वैसे ही व्यवहार भी धर्म से जुड़ जाए तो वह मधुर, पुण्यकारी और कल्याणकारी हो जाता है, और यदि उसमें हिंसा, झूठ, बेईमानी आदि मिल जाए तो वह अधार्मिक और पापमय बन जाता है।

साधु का जीवन तो पूर्णतः धर्ममय होता है, परंतु गृहस्थों का जीवन भी यदि संयम, सदाचार और नैतिकता से युक्त हो, तो वह उत्तम हो सकता है। जैसे किसी शुद्ध साधु को सुपात्र दान देना का प्रयास होना चाहिए। सांसारिक जीवन में जितना संभव हो सके, कोई आ जाए तो उसकी मदद का भी प्रयास किया जा सकता है।रहीम का दोहा उद्धृत करते हुए पूज्यवर ने कहा- 'रहिमन वे नर मर चुके, जो कोई मांगन जाय। उनसे पहले वे मरे, जिन मुख निकसत नाय।।'

(शेष पेज 10 पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
14 अप्रैल - 20 अप्रैल, 2025

सत्य का मार्ग है राजपथ के समान : आचार्यश्री महाश्रमण

सिधाड़ा।
5 अप्रैल, 2025

धर्म धुरंधर आचार्यश्री महाश्रमणजी अपनी धवल सेना के साथ लगभग 13 किलोमीटर का विहार कर सिधाड़ा पधारे। पावन पाथेय प्रदान करते हुए उन्होंने फरमाया कि अंग्रेजी में एक प्रसिद्ध उक्ति है—

'Honesty is the best policy', अर्थात 'ईमानदारी सर्वोत्तम नीति है।' साधु-संतों के जीवन में तो ईमानदारी एक जीवन-मूल्य बन जाती है। दीक्षा ग्रहण करते समय ही वे सर्व मृषावाद विरमण और सर्व अदत्तादान विरमण जैसे महान व्रतों को आजीवन स्वीकार करते हैं।

गृहस्थ जीवन में भी ईमानदारी का विशेष स्थान होना चाहिए। ऐसा कोई असत्य न बोला जाए जिससे हिंसा की आशंका हो। मनुष्य या तो अपने लाभ के लिए, या किसी और के लिए झूठ बोलता है। झूठ बोलने के प्रमुख कारण हैं—क्रोध और भय। कभी-कभी व्यक्ति स्वयं के बचाव के लिए या थोड़े से लाभ के लिए भी असत्य का सहारा लेता है।

बच्चों में भी यह संस्कार डालना चाहिए कि वे कभी झूठ न बोलें। कई बच्चे पूर्वजन्म के संस्कार लेकर आते हैं—यदि उचित मार्गदर्शन और प्रेरणा मिले, तो वे संस्कार जागृत हो सकते हैं। कई ऐसे छोटे-छोटे संत हैं, जो आगे चलकर विद्वान और सिद्ध पुरुष बनते हैं। आचार्यश्री ने प्रसंगवश कहा कि मुख्यमुनि के बचपन में उनके गांव में साध्वियों का पदार्पण हुआ और बाद में दीक्षा भी हो गई। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी, परम पूज्य गुरुदेव तुलसी भी तो बच्चे ही थे, लेकिन इतना विकास हुआ कि वे हमारे धर्मसंघ के अधिनेता बन गए। आचार्यश्री ने मुख्यमुनिश्री को बचपन की घटना आदि सुनाने को कहा तो मुख्यमुनि श्री महावीरकुमारजी ने अपने बचपन के प्रसंगों की प्रस्तुति दी।

पूज्यवर ने कहा - बाल्यकाल में ही जिनके भीतर सच्चाई, चोरी से दूरी और छल-कपट से विमुखता के भाव होते हैं, वही जीवन में महानता की ओर अग्रसर होते हैं। हर महान व्यक्ति भी कभी एक छोटा बच्चा ही था। यदि जीवन में सुसंस्कारों की संपत्ति हो, तो व्यक्ति सच्चे अर्थों में समृद्ध बन सकता है। सच्चा व्यक्ति तनाव-मुक्त रह सकता है, जबकि झूठ बोलने वाला सदैव चिंता और भय में जीता है।

सच्चाई परेशान हो सकती है, लेकिन परास्त नहीं होती। सत्य का मार्ग राजपथ के समान है—सीधा, स्पष्ट और प्रामाणिक। यदि व्यक्ति जीवन में सही मार्ग चुनता है, तो वह महानता की ओर बढ़ सकता है। हमें सदैव सच्चाई के मार्ग पर चलना चाहिए।

पूज्यवर के स्वागत में प्राथमिक शाला से भावेशभाई पांचाल, सरपंच महबूब भाई एवं उपासक प्रभुभाई मेहता ने अपनी भावनाएँ व्यक्त कीं।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

मानव जीवन का अधिकतम उपयोग हो साधना के लिए : आचार्यश्री महाश्रमण

रोजू।
3 अप्रैल, 2025

आत्म साधना के विशिष्ट साधक आचार्यश्री महाश्रमणजी कच्छ जिले की सीमा को पार कर लगभग 16 किलोमीटर का प्रलम्ब विहार करते हुए पाटन जिले के रोजू स्थित अमृत कलापूर्ण तीर्थ विहार धाम में पधारे। उपाश्रय में उपस्थित जनमेदिनी को मंगल देशना प्रदान कराते हुए पूज्यवर ने फरमाया कि जैन ग्रन्थों में आगम वांग्मय का विशिष्ट महत्वपूर्ण स्थान है। हमारे यहां 32 आगम प्रतिष्ठा प्राप्त हैं। उनमें एक आगम है- उत्तराध्ययन। यह 36 अध्ययनों वाला आगम है। इसमें तत्व बोध संबंधी जानकारियां भी दी गई है तो आध्यात्मिक साधना का दिशा-निर्देशन भी मानो किया गया है।

इस आगम का दसवां अध्ययन छोटा सा है, किन्तु 'समयं गोयम ! मा पमायए' यह एक चौथा चरण बार-बार श्लोकों के अन्त में आता है। इसी अध्ययन के श्लोक में कहा गया है कि मनुष्य जन्म दुर्लभ है। लंबे काल तक यह मनुष्य जन्म कई प्राणियों को नहीं मिलता है। यह मनुष्य जन्म जो दुर्लभ है, अभी हमें प्राप्त है। गौतम के नाम संदेश दिया गया है कि समय मात्र प्रमाद मत करो। कितने प्राणियों को तो आज तक यह दुर्लभ मानव जीवन मिला भी नहीं है। अनन्त काल हो गया और उन्होंने जन्म भी ले लिए पर मुनष्य जन्म नहीं मिला।

मानव जीवन में साधुपन आ जाये तो वह इसे सार्थक बनाने का उत्कृष्ट उपाय है। गृहस्थ जीवन में धार्मिक साधना कर अन्तर्मन से भक्ति कर इसे सार्थक बनाया जा सकता है। नवकार मंत्र का जप करें, गुरु भक्ति करें, गुरु की पर्युपासना करें। गुरु के तो मौन से भी कुछ प्राप्त किया जा सकता है।

प्राणियों के प्रति सत्वानुकंपा रखें। साधु तो क्षमा-करूणा मूर्ति होते हैं। साधु को सुपात्र दान दें। गुणानुवाद करें, गुणों की पूजा-सम्मान करें। गुणग्राही बनें। शास्त्रों की वाणी सुनें। साधुओं से प्रवचन सुनें। भौतिकता में रहकर भी अध्यात्म की साधना करें। इच्छाओं का संयम करें। यों हमारा मानव जीवन सुफल-सफल बन सकता है।

हमारा परम लक्ष्य तो मोक्ष है, पर जब तक मोक्ष न मिले, दुर्गति में तो न जाना पड़े। धर्म के रास्ते पर चलेंगे तो दुर्गति से बचाव हो सकता है। पाप के मार्ग पर न चलें। नरक-निगोद में न जाना पड़े। एक सम्यक्त्व आने से कितनों से छुटकारा मिल सकता है।

पूज्यवर के स्वागत में उपाश्रय से अजीतसिंह ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

विश्वास, संवाद और संस्कार से मजबूत होते हैं रिश्ते

राजाजीनगर। हैप्पी कपल खुशियां डबल कार्यशाला में साध्वी संयमलता जी ने कहा कि विश्वास आपसी रिश्तों की डोर है, जो दांपत्य जीवन को खुशहाल और परिवार को एकजुट बनाए रखता है। सहनशीलता से हम दूसरों की भावनाओं को समझ पाते हैं और मधुर वाणी से जीवन में सुख-शांति आती है।

साध्वीश्री मार्दवश्री जी ने कहा कि तकनीकी व एआई युग में संवाद की कमी के कारण रिश्ते कमजोर हो रहे हैं। बच्चों में बचपन से संस्कार और सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास जरूरी है। साध्वी मनीषाप्रभा जी ने कहा कि आपसी सम्मान से जीवन की दिशा सुदृढ़ रहती है।

कार्यक्रम में अभातेममं सदस्य मधु कटारिया ने भी अपने विचार रखे। उपस्थित गणमान्यजनों में तेरापंथ सभा अध्यक्ष अशोक चौधरी, तेयुप अध्यक्ष कमलेश चौरडिया, महिला मंडल अध्यक्षा उषा चौधरी, सकल जैन समाज के सदस्य व अनेक श्रावक शामिल रहे। कार्यशाला के सफल संयोजन में रनित कोठारी व जयंतीलाल गांधी का योगदान उल्लेखनीय रहा।

आध्यात्मिक मिलन से तरंगित हुआ उत्साह और उमंग

अमर नगर, जोधपुर।

तेरापंथ भवन में 'शासनश्री' साध्वी सत्यवतीजी एवं साध्वी अणिमाश्रीजी का आध्यात्मिक मिलन हुआ। विनय एवं वात्सल्य का अद्भुत नजारा देखकर श्रावक समाज भाव-विभोर हो गया। 'शासनश्री' साध्वी सत्यवती जी ने कहा आज अमर नगर में तेरापंथ धर्मसंघ की दो धाराओं का संगम हुआ है। तेरापंथ धर्मसंघ एक महासागर है। जब सागर में नदियां मिलती हैं तो सागर में लहरे उठने लगती हैं।

आज हमारे मन सागर में उत्साह व उमंग की लहरे तरंगित हो रही हैं। साध्वी अणिमाश्री जी बहिर्विहार में पहली बार मिली हैं, ये प्रलम्ब यात्रा करने वाली साध्वी हैं। दूर देशों की यात्रा कर संघ के गौरव को बढ़ाया है। इनकी कार्यशली एवं प्रवचन शैली संघ प्रभावक है। जब हम उन कर्मजा शक्ति के बारे में सुनते हैं तो हमें सात्विक प्रसन्नता होती हैं। इन्होंने अपना भी विकास किया हैं एवं सहवर्ती साध्वियों का भी विकास करवाया है।

साध्वीश्री ने मंगलकामना के स्वरों में कहा - तुम अपने मन, वाक् एवं काय कौशल के द्वारा धर्मसंघ की प्रभावना करती रहो।

साध्वी अणिमाश्रीजी ने कहा - श्रद्धा एवं समर्पण के द्वारा आस्था एवं निष्ठा के धरातल पर आसीन तेरापंथ धर्मसंघ बेजोड़ है। तेरापंथ धर्मसंघ जिनशासन के नीलगगन में सूरज बनकर चमक रहा है। हमारे आचार्य गण के महासूर्य हैं तो साधु-साध्वी संघ एवं संघपति की तेजस्वी किरणे हैं।

संघ सूर्य की एक किरण के रूप में विराजमान 'शासनश्री' साध्वी सत्यवती जी के दर्शन पाकर हम पुलकित एवं प्रमुदित हैं। आपकी अनुभव संपदा अटूट है, आपके कर्तत्व की झांकी आज हम अमर नगर में देख रहे हैं। आप द्वारा निसृत वात्सल्य निर्झर में अवगाहन कर हम अभिभूत है। आपकी ऋजुता एवं सौम्यता हमारे प्रेरणा प्रदीप हैं। 'शासनश्री' एवं आगीवान बनने के बाद हम पहली बार मिले हैं। हम आपके चरणों में शुभ भावों की बधाई संप्रेषित करते हैं।

साध्वी पुण्यदर्शना जी साध्वी शशिप्रज्ञा जी वं साध्वी रोशनी प्रभाजी ने गीत के माध्यम से अभ्यागत साध्वियों का अभिनंदन किया। साध्वी कर्णिकाश्रीजी, साध्वी डॉ सुधाप्रभाजी, साध्वी समत्व्यशाजी वं साध्वी मैत्रीप्रभाजी ने विभिन्न रागिनियों में गुम्फित गीत के माध्यम से अपनी खुशी का इजहार किया।

सरदारपुरा सभाध्यक्ष सुरेश जीरावला, संतोष जैन ने अपने भावों की अभिव्यक्ति देते हुए आगन्तुक साध्वी वृन्द का स्वागत किया।

अहिंसा, संयम तपमय होता है धर्म

रायसिंहनगर।

धर्म मंदिर, मस्जिद, गिरजाघर आदि धर्म स्थान में नहीं है, अपने भीतर में झांकने से ही धर्म का पता चलेगा। सब मंगलो में उत्कृष्ट मंगल धर्म है। अहिंसा, संयम और तप ही धर्म है। ये विचार मुनि सुमति कुमारजी ने ब्राह्मण सभा में उपस्थित जनमेदिनी को संबोधित करते हुए कहे। उन्होंने कहा कि संत कल्पवृक्ष होते हैं उनका स्वागत दुर्गुणों के त्याग, संयम व तप के द्वारा होना चाहिए। संतों के पास बैठने से शांति मिलती है, दीपक के प्रकाश की तरह संत अज्ञान के अंधकार को दूर करते हैं। जन-जन के मन को करुणा, शांति, मैत्री एवं सद्भावना के द्वारा हरा-भरा करते हैं। श्रावक-श्राविकाओं को साधुचर्या धर्म संघ की रीति-नीति बारे जागरूक रहने की प्रेरणा देते हुए 21 दिवसीय प्रवास का भरपूर लाभ ग्रहण करने की सलाह दी।

तेरापंथ महिला मंडल की बहनों ने गीतिका का संगान किया। नमन आंचलिया ने गीत, जयदेव गोयल ने वक्तव्य के माध्यम से अपने विचार व्यक्त किए। स्थानीय सभा के सह सचिव डॉ. मुकेश जैन ने मुनिश्री के सानिध्य में होने वाले कार्यक्रमों की जानकारी दी। कार्यक्रम संयोजक प्रदीप बोथरा ने मुनिश्री के प्रवास हेतु पूज्य आचार्य प्रवर के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। ब्राह्मण सभा की ओर से सचिव रमेश महर्षि ने मुनिश्री और सहयोगी संतों का स्वागत किया। इससे पूर्व प्रातः शोभायात्रा के साथ मुनिश्री ने अपने सहयोगी मुनि देवार्य कुमारजी एवं मुनि आगम कुमार जी के साथ ब्राह्मण सभा में प्रवेश किया।

फ्यूचरा मीट एंड ग्रीट का हुआ आयोजन

दिल्ली।

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम द्वारा अणुव्रत भवन में फ्यूचरा मीट का आयोजन किया गया। भवन में मुनि अभिजीत कुमार जी के दर्शन कर टीपीएफ दिल्ली के सचिव हिमांशु कोठारी ने मुनिश्री को टीपीएफ की ओर से किए जा रहे कार्यक्रमों की जानकारी दी। मुनि अभिजीत कुमार जी ने सभी को हर पल खुश रहने की सीख दी। इसके बाद कॉन्फ्रेंस हॉल में कार्यक्रम की शुरुआत नवकार मंत्र के साथ की गई। दिल्ली-एनसीआर की फ्यूचरा मीट एंड ग्रीट की कन्वेनर प्रीति चोरड़िया ने नवकार मंत्र का उच्चारण किया। सेक्रेटरी हिमांशु कोठारी ने सभी का स्वागत किया। प्रीति चोरड़िया ने टीपीएफ के राष्ट्रीय फ्यूचरा कन्वेनर मनीष कटारिया का परिचय प्रस्तुत किया। मनीष कटारिया ने दिल्ली-एनसीआर के उपस्थित फ्यूचरा से मुलाकात की और उनके बारे में विस्तार से जाना और उन्हें टीपीएफ के कार्यक्रमों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेने के लिए प्रेरित किया। कन्वेनर प्रीति चोरड़िया ने सभी का आभार ज्ञापन किया।

अप्रभावित होकर खेलने वाला विजयी होता है

सिरियारी।

आचार्य भिक्षु समाधि स्थल संस्थान सिरियारी के भिक्षु आराध्यम् में सप्तम प्रेक्षाध्यान मासिक शिविर के समापन कार्यक्रम में शिविर साधकों को सम्बोधित करते हुए मुनि धर्मेशकुमारजी ने कहा- अप्रभावित होकर खेलने वाला विजय प्राप्त करता है। उसी प्रकार ध्यान साधना में आने वाले विघ्नों से अप्रभावित रहकर ही लक्ष्य की ओर अग्रसर हुआ जा सकता है। संकल्प शक्ति, निरन्तरता से हर समस्या का समाधान खोजा जा सकता है।

जीवन के युद्ध में अपनी कमजोरियों को परास्त कर अच्छाईयों की ओर बढ़ने वाला ही विजयी हो सकता है। मुनि चैतन्य कुमारजी 'अमन' ने अपने उद्बोधन में कहा- हमें जब तक मंजिल न मिले तब तक अपने पुरुषार्थ को जारी रखना होगा। दीपक, लाईट, चन्द्र, तारे, सूर्य सारे प्रकाश अधूरे हैं। पूर्ण प्रकाशमान हमारी आत्मा है। ध्यान का लक्ष्य है उस पूर्णता के प्रकाश को प्राप्त करना।

मुनि सुविधि कुमारजी ने साधक-साधिकाओं को मार्ग दर्शन करते हुए अपने विचार प्रस्तुत किए। संस्थान के उपाध्यक्ष उतमचंद सुखलेचा, मुख्य प्रशिक्षक नागपुर से समागत आनंदमल सेठिया, हेमराज सुन्देचा, अभिषेक दूगड़, पाली जिलाध्यक्ष सुनिल भण्डारी, हनुमान बरड़िया आदि ने अपने अनुभव विचार प्रस्तुत किए।

प्रेक्षागीत का संगान कर कार्यक्रम का शुभारंभ साधिकाओं ने किया। भरत धोका ने विचार प्रस्तुत किए। कार्यक्रम का संचालन लक्षिता धोका ने किया।

गुरु दृष्टि की आराधना में समर्पित होकर करें कार्य

गंगाशहर।

गुरुदेव तुलसी नैतिकता के पुरोधा संत थे। जीवन पर्यन्त मानव मात्र में नैतिकता और मानवीय मुल्यों की स्थापना हेतु सजग रहे। उनकी पावन समाधि गंगाशहर में है, और यह संस्थान उनकी स्मृति को जन-जन में चिर स्थायी रूप प्रदान करते हुए आध्यात्मिक गतिविधियों में संलग्न रहे। नये-नये कार्यक्रमों के माध्यम से ज्यादा से ज्यादा लोगो को जोड़े। उपरोक्त विचार उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमार जी ने नैतिकता के शक्तिपीठ की टीम के शपथ ग्रहण समारोह में व्यक्त किए।

मुनिश्री ने कहा कि गणेशमल बोथरा संघ भक्त और समर्पित श्रावक है। पूरा बोथरा परिवार पीढ़ियों से गण भक्त रहा है। पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण जी की कृपा दृष्टि से इस बार अध्यक्ष पद का दायित्व मिला है। समाज के लोगों को साथ लेकर अच्छे से अच्छा कार्य करें, यही मंगलकामना है। मुनि श्रेयांसकुमार जी ने नायक की सफलता के गुणों का उल्लेख करते हुए मंगलकामना व्यक्त की। इससे पूर्व निवर्तमान अध्यक्ष हंसराज डागा ने आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान की विविध गतिविधियों और कार्य कलापों का विस्तार से वाचन किया और 2 साल मंत्री के रूप में और फिर 2 साल अध्यक्ष के रूप में किए अपने कार्यों के लिए गुरुदेव के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की और नये अध्यक्ष को शुभकामनाएँ प्रेषित की। नव मनोनीत अध्यक्ष गणेशमल बोथरा ने अपनी टीम की घोषणा करते हुए निवर्तमान अध्यक्ष हंसराज डागा से शपथ ग्रहण की। सत्र 2025-2027 के लिए उपाध्यक्ष किशन लाल बैद, जेठमल बोथरा, शुभकरण बोथरा, मंत्री दीपक आंचलिया, सहमंत्री दीपिका बोथरा, राजेन्द्र पारख एवं कोषाध्यक्ष भैरूदान सेठिया के नामों की घोषणा करते हुए 51 सदस्यों की कार्यकारिणी का गठन किया गया। अपने वक्तव्य में नव मनोनीत अध्यक्ष गणेशमल बोथरा ने आचार्यश्री के प्रति कृतज्ञता व्यक्त संस्थान के पूर्व अध्यक्षों का स्मरण किया। संस्थान के प्रधान न्यासी महावीर रांका ने इस अवसर पर गुरुदेव के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए नए अध्यक्ष एवं पूरी टीम को बधाई दी। कार्यक्रम का कुशल संचालन वरिष्ठ उपाध्यक्ष किशन बैद नें किया। आभार ज्ञापन मंत्री दीपक आंचलिया ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
14 अप्रैल - 20 अप्रैल, 2025

266वें भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस पर विविध कार्यक्रम

आत्म कल्याण के लिए संत भीखणजी ने किया अभिनिष्क्रमण

ट्रिप्लीकेन, चेन्नई। मुनि दीपकुमार जी के सान्निध्य में 266वां आचार्य भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस का आयोजन श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ ट्रस्ट ट्रिप्लीकेन एवं श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा साहूकारपेट के संयुक्त तत्वावधान में आयोजन किया गया। मुनि दीपकुमार जी ने कहा - आचार्य भिक्षु ने आत्म कल्याण के लिए अभिनिष्क्रमण किया। उनका मनोबल बहुत मजबूत था। उन्होंने विरोधों और कष्टों की परवाह नहीं की, वे महावीर वाणी पर पूर्ण रूप से समर्पित थे। आचार्य भिक्षु सिद्धांतनिष्ठ व्यक्तित्व के धनी थे। उन्होंने अपने आदर्शों और सिद्धांतों के साथ कभी समझौता नहीं किया। उन्होंने सुख-सुविधाओं से दूर रहकर कांटों भरा पथ अपनाया। व्यक्ति के अंतिम पड़ाव शमशान को आचार्य भिक्षु ने अभिनिष्क्रमण के बाद प्रथम पड़ाव बनाया। इस वर्ष में आचार्य भिक्षु का जन्म त्रिशताब्दी प्रारंभ होने वाला है। हम आचार्य भिक्षु के जीवन दर्शन के विशेष प्रेरणा ले, अध्ययन करें। मुनिश्री ने आगे कहा- आज रामनवमी का दिन है। श्रीराम का जीवन भी सत्य को समर्पित था। भारतीय संस्कृति में श्री राम एक आदर्श पुरुष है। मुनि काव्यकुमार जी ने कहा- जो सत्य की जीर्ण-शीर्ण दीवारों को ढहाने के लिए तूफान बनकर आया था और संघर्षों के तूफानों में हिमालय बनकर खड़ा रहा था, उनका नाम है आचार्य भिक्षु। मुख्य वक्ता गौतम सेठिया ने अपने भाव व्यक्त किए। कार्यक्रम में साहूकारपेट तेरापंथी सभा के अध्यक्ष अशोक खंतग, विमल चिप्पड़, पल्लावरम सभा अध्यक्ष दिलीप भंसाली आदि ने विचार रखे। संचालन विजय राज गेलड़ा ने किया।

सत्य मार्ग पर निरंतर बढ़ने वाले थे भिक्षु

अमर नगर। तेरापंथ भवन में आयोजित हुये महामना भिक्षु को समर्पित अभिनिष्क्रमण दिवस कार्यक्रम को संबोधित करते हुए 'शासनश्री' साध्वी सत्यवती जी ने बताया कि आचार्य भिक्षु सत्य मार्ग पर निरंतर बढ़ने वाले थे। उन्होंने बताया भिक्षु स्वामी विभिन्न कष्टों को सहकर कष्ट सहिष्णु बने। साध्वी रोशनीप्रभाजी ने राजनगर की घटना का प्रस्तुतीकरण किया। साध्वी शशिप्रज्ञाजी ने गीतिका का संगान किया। साध्वी पुण्यदर्शनाजी ने अभिनिष्क्रमण के आधार-स्वपन, समर्पण, दीप एवं क्रांति की व्याख्या की। कार्यक्रम की शुरुआत तेरापंथ युवक परिषद् द्वारा मंगलाचरण की प्रस्तुति से की गयी। तेयुप अध्यक्ष मिलन बांठिया, महिला मंडल अध्यक्षा दिलखुश तातेड़ ने अपने विचार रखे। तेरापंथ महिला मंडल द्वारा गीतिका प्रस्तुत की गई। शशि टांटिया एवं सरिता बैद ने मधुर गीतिका के माध्यम से आचार्य भिक्षु के प्रति अपने भाव व्यक्त किये। कार्यक्रम का कुशल संचालन तेयुप उपाध्यक्ष मनसुख संचेती एवं आभार ज्ञापन तेरापंथ सभा मंत्री महावीर चोपड़ा ने किया।

संयम की कसौटी पर खरा उतरे वह धर्म

गंगाशहर। भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस पर मुनि कमल कुमार जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु सिद्ध पुरुष थे, उन्होंने व्यक्तियों को नहीं, सिद्धांतों को महत्व दिया। सिद्धांतों के साथ सत्य के लिए विक्रम संवत 1817 चैत्र सुदी नवमी को अभिनिष्क्रमण किया। शुद्ध साधु जीवन पालन करना ही उनका मुख्य लक्ष्य था। उनका संकल्प बहुत मजबूत था। हमारे दिल दिमाग में आचार्य भिक्षु के सिद्धांत प्रति क्षण बने रहें और हमारा कर्तव्य भी है कि आचार्य भिक्षु के दर्शन को जन-जन तक पहुंचाने का प्रयास करते रहे। अहिंसा- संयम-तप आचार्य भिक्षु की दर्शन क्रांति के मुख्य आधार थे। आज भी इन सिद्धांतों के बल पर धर्म संघ आगे बढ़ रहा है। आचार्य भिक्षु के संघर्ष द्रौपदी के चीर की तरह थे फिर भी आचार्य भिक्षु ने समता से उन्हें सहन किया। भगवान महावीर की वाणी को सरल भाषा में आम जनता को प्रतिबोध दिया। आचार्य भिक्षु के पास धर्म और धर्म की कसौटी थी - संयम और असंयम। जो कार्य संयम की कसौटी पर खरा उतरे वह धर्म और खरा ना उतरे वह अधर्म। मुनि श्रेयांश कुमार जी ने मुक्तक के माध्यम से अपनी भावांजलि व्यक्त कर कहा कि आज दिन मुनि विमलविहारी जी को संयम जीवन के 32 वर्ष पूरे हो गए। मुनि प्रबोधकुमार जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु सत्य के पुजारी थे। सत्य का अन्वेषण करना उनके जीवन का परम लक्ष्य था। सत्य की खोज में आचार्य भिक्षु ने अनेक संघर्षों का सामना किया। उनका मुख्य घोष था 'आत्मा रा कारज सारसा, मर पूरा देसां'। हमें आचार्य भिक्षु के गुणों की आराधना करनी चाहिए। मुनि विमलविहारी जी ने कहा कि आज से 265 वर्ष पूर्व आचार्य भिक्षु ने बगड़ी से किसी विशेष प्रयोजन से प्रस्थान किया जो अभिनिष्क्रमण कहलाया। साधु जीवन में उन्होंने इतना कष्ट उठाया फिर भी वे हमेशा सत्य की लौ को जगाते रहे। मुनिश्री ने अपनी दीक्षा से सम्बंधित संस्मरण प्रस्तुत किया। मुनि मुकेश कुमार जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु की बुद्धि विलक्षण व तेज थी। वे सरल तरीके से जवाब देते थे। मुनि नमि कुमार जी ने कहा कि आज का दिन तेरापंथ धर्म संघ के लिए बहुत महत्वपूर्ण दिन है। आज के दिन के कारण ही हमें तेरापंथ का नंदनवन मिला। आचार्य भिक्षु ने सिद्धांतों और मर्यादाओं के लिए नया पथ चुना। इस अवसर पर 21 से अधिक वक्ताओं ने भाषण, गीतिका, कविता, मुक्तक आदि के माध्यम से अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति दी।

समर्पण, संघर्ष और सफलता की मिसाल है भिक्षु का जीवन

राजाजीनगर। साध्वी संयमलता जी के सान्निध्य में 266वां भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस एवं भिक्षु दर्शन कार्यशाला का भव्य आयोजन तेरापंथ सभा एवं तेरापंथ युवक परिषद द्वारा अशोका कन्वेंशन हॉल, राजाजीनगर में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ सामूहिक नमस्कार महामंत्र से हुआ। इस अवसर पर भिक्षु श्रद्धा स्वर टीम द्वारा विशेष गीतिका एवं विजय गीत की प्रस्तुति दी गई। दक्षिणांचल महासभा प्रभारी प्रकाशचंद लोढ़ा ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया। तेरापंथ सभा अध्यक्ष अशोक चौधरी एवं तेयुप अध्यक्ष कमलेश चौरडिया ने उपस्थित श्रावक समाज का स्वागत करते हुए अपने विचार व्यक्त किए और आचार्य भिक्षु के प्रति श्रद्धा व्यक्त की। भिक्षु दर्शन प्रशिक्षण कार्यशाला के राष्ट्रीय सह-प्रभारी राकेश पोखरना ने भी अपने विचार साझा किए।साध्वी संयमलता जी ने श्रावकों को संबोधित करते हुए कहा, "सत्य की खोज के लिए आचार्य भिक्षु ने अभिनिष्क्रमण किया। गालियाँ और शारीरिक प्रहार सहते हुए भी वे सत्य के मार्ग से विचलित नहीं हुए। वे नैसर्गिक प्रतिभा के धनी थे। उनका जीवन समर्पण, संघर्ष और सफलता की मिसाल है। आज हमें उनके जीवन से प्रेरणा लेकर सत्य, नैतिकता और ईमानदारी से जीवन जीने का संकल्प लेना चाहिए।" मुख्य वक्ता बजरंग जैन ने अपने अनुभव साझा करते हुए कहा, "भिक्षु का नाम जीवन को समृद्ध बनाता है। भक्ति, श्रद्धा और समर्पण से व्यक्ति अपने सम्यक्त्व को पुष्ट करता है और वीतराग मार्ग की ओर अग्रसर होता है।" साध्वी मार्दवश्रीजी ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए कहा कि भिक्षु सत्य के पुजारी थे। उन्होंने सर्वस्व त्यागकर अकेले सत्य के मार्ग पर चलना स्वीकारा और उनके पीछे तेरापंथ का विशाल कारवाँ जुड़ता चला गया। इस अवसर पर महासभा प्रभारी प्रकाशचंद लोढ़ा, संजय बाठिया (सभा शाखा प्रभारी), विजयनगर सभा अध्यक्ष मंगल कोचर, यशवंतपुर सभा अध्यक्ष सुरेश बरडिया, हनुमंतनगर सभा अध्यक्ष गौतम दक, सहित बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाएं उपस्थित थे। आभार ज्ञापन सभा के मंत्री चंद्रेश मांडोत ने किया।

आचार्य भिक्षु में था अप्रतिम साहस

चीकामंडी/ कैथल। साध्वी समन्वयप्रभाजी के सान्निध्य में चीकामंडी व कैथल सभा के संयुक्त तत्वावधान में भिक्षु अभिनिष्क्रमण कार्यक्रम मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र से किया गया। मंगलाचरण किशोर मण्डल सदस्य मुदित जैन ने किया। युवक परिषद् एवं महिला मंडल द्वारा गीतिकाओं का संगान किया गया। कैथल सभा के अध्यक्ष अश्विन कुमार एवं भगवानदास ने अपने भाव प्रस्तुत किए।

साध्वी समन्वयप्रभा जी ने आचार्य श्री भिक्षु की शक्ति से संबंधित कुछ प्रसंग सुनाएं और कहा कि आज से लगभग 265 वर्ष पूर्व उन्होंने बगड़ी में अभिनिष्क्रमण किया। उन्होंने कितनी कठिनाई और विरोधों को झेला, उनमें बहुत ही साहस रहा होगा। हम सभी के भीतर संकल्प शक्ति पुष्ट होती रहे। साध्वी संयमप्रभाजी ने अपनी भावांजलि एक कविता के द्वारा, साध्वी चारुलता जी ने गीतिका के द्वारा प्रस्तुत की। कार्यक्रम में पटियाला व गोविन्दगढ मंडी से भी श्रावक-श्राविकाएं उपस्थित रहे।

भिक्षु स्वामी के त्याग, बलिदान से तेरापंथ का इतिहास गौरवान्वित

वाशी। जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा के निर्देशन में श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा वाशी नवी मुंबई के तत्वावधान में भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस कार्यक्रम अणुव्रत सभागार वाशी नवी मुंबई में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ 'शासनश्री' साध्वी कंचनप्रभाजी ने नमस्कार महामन्त्र द्वारा किया। मंगलाचरण भिक्षु भक्ति महिला मंडल वाशी द्वारा किया गया। स्वागत वक्तव्य तेरापंथी सभा वाशी अध्यक्ष पंकज चंडालिया, तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष अरविंद खाटेड़ ने दिया। तेरापंथ महिला मंडल मंत्री सीमा मेहता, तेरापंथ सभा कोपरखैरना अध्यक्ष जसराज छाजेड ने गीतिका के माध्यम से अपने विचार व्यक्त किये।

'शासनश्री' साध्वी कंचनप्रभाजी ने भिक्षु स्वामी के त्याग, बलिदान एवं तेरापंथ के इतिहास का विवेचन कर लोगों को लाभान्वित किया। 'शासनश्री' साध्वी मंजूरेखाजी ने भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस के बारे में श्रावक समाज को संबोधित किया। साध्वी उदितप्रभाजी, साध्वी निर्भयप्रभाजी, साध्वी चेलनाश्रीजी ने गीतिका के माध्यम से अपने भाव प्रस्तुत किए। ज्ञानशाला प्रशिक्षाओं के द्वारा भिक्षु अष्टकम् का संगान किया गया। कार्यक्रम का संचालन सोनिया सिंघवी ने किया।

कार्यक्रम के दूसरे चरण में जैन विद्या प्रमाणपत्र वितरण का कार्यक्रम हुआ जिसमें हार्बर लाइन आंचलिक संयोजिका अनीता सियाल एवं तेरापंथ सभा अध्यक्ष पंकज चंडालिया विचार व्यक्त किये। दियांश संचेती को केन्द्रीय स्तर पर भाग 1 में द्वितीय स्थान मिलने पर सम्मानित किया गया। भाग 9 में उत्तीर्ण परिक्षार्थी मंजु संचेती, रानी बापना, वनीता मेहता, रेखा मेहता, मिनल बापना के साथ भाग 1 से 9 तक के 71 परिक्षार्थियों को सर्टिफिकेट का वितरण एवं सम्मान किया गया।

कार्यक्रम का संचालन केन्द्र व्यवस्थापिका इंदु बड़ाला ने किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में सह केंद्र व्यवस्थापिका मेघना आच्छा और नीतू परमार का पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ।

संक्षिप्त खबर

विश्व स्वास्थ्य दिवस पर निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर

राजाजीनगर। तेरापंथ युवक परिषद राजाजीनगर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर-श्रीरामपुरम के अंतर्गत 266वें भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस एवं विश्व स्वास्थ्य दिवस के उपलक्ष में दो दिवसीय निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का समायोजन किया गया। प्रथम दिवस मरियपनपाल्या स्थित गायत्री पार्क एवं द्वितीय दिवस सुब्रमण्यनगर स्थित संगोली रायण्णा पार्क में ग्लूकोमीटर के माध्यम से ब्लड शुगर एवं रक्त चाप जांच की गई। कैम्प की शुरुआत सामूहिक नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुई। कुल 116 सदस्यों ने इस शिविर का लाभ लिया।

परीक्षा की तैयारी – ध्यान के प्रयोग

हैदराबाद। वैसली हाईस्कूल पीजी रोड में प्रेक्षाध्यान - जीवन विज्ञान का कार्यक्रम आयोजित हुआ। विद्यार्थियों ने राष्ट्र गान का संगान किया। निर्मला बैद ने विद्यार्थियों को परीक्षा की तैयारी में सहायता हेतु मन की एकाग्रता व शांति के प्रयोग करवाये। समय प्रबंधन एवं अणुव्रत के नियमों से भी विद्यार्थियों को परिचित करवाया। श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ सभा के अध्यक्ष सुशील संचेती ने अपने विचार अभिव्यक्त किये। विद्यालय में तेलुगु भाषा में अणुव्रत एवं प्रेक्षाध्यान का साहित्य हनुमान जिनेन्द्र बैद परिवार की तरफ से भेंट किया गया।

भक्ति की शक्ति अपरम्पार

सिरियारी। आचार्य श्री भिक्षु समाधि स्थल संस्थान सिरियारी में भिक्षु भक्ति का आयोजन मुनि चैतन्य कुमारजी 'अमन' के निर्देशन में आयोजित हुआ। भीलवाड़ा से समागत संगायिका अन्तिमा जैन ने अपने सुमधुर संगान से पूरे माहौल को भिक्षुमय बना दिया। इस अवसर पर मुनिश्री ने कहा- भक्ति की शक्ति अपरम्पार होती है, यह व्यक्ति का परमात्मा के साथ तादात्म्य स्थापित कर देती है। त्रयोदशी, चतुर्दशी और पूर्णिमा ये तीनों दिन महत्त्वपूर्ण होते हैं। संगीत के स्वरों के साथ स्वयं को भावित करके रंग से रंग की तरह मिलने का प्रयास करें। इस अवसर पर सिरियारी संस्थान के जयन्तिलाल बरलोटा, संगठन मंत्री केवलचंद सेठिया एवं श्रावक-श्राविका समाज उपस्थित थे।

रक्तदान शिविर के विभिन्न आयोजन

विजयनगर। अभातेयुप निर्देशित मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव के अंतर्गत एम्बैसी गोल्फ कोर्स सॉफ्टवेयर पार्क परिसर में गोल्फ लिंक्स सॉफ्टवेयर पार्क प्राइवेट लिमिटेड कंपनी और तेरापंथ युवक परिषद्, विजयनगर द्वारा रक्तदान शिविर आयोजित किया गया। इस अवसर पर एमबीडीडी दक्षिण प्रभारी अमित दक ने रक्तदान के महत्व और अभातेयुप के योगदान के बारे में जानकारी प्रदान की। तेयुप विजयनगर द्वारा इजीएल टीम से आदित्य, शिखा एवं टीम का सम्मान किया गया। लायंस ब्लड बैंक, एस्टर ब्लड बैंक टीम ने स्वास्थ्य जांच करते हुए 55 यूनिट्स रक्त संग्रहण किया। परिषद् से अध्यक्ष कमलेश चोपड़ा, वरिष्ठ उपाध्यक्ष विकास बांठिया, मंत्री संजय भटेवरा, कोषाध्यक्ष अमित नाहटा, कार्यकारिणी सदस्य पीयूष ललवानी, शिविर के संयोजक संजय बाफना का विशेष श्रम रहा।

उत्तर कोलकाता। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में द आर्यन्स स्कूल में ब्लड डोनेशन कैंप का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से हुई। ब्लड डोनेशन कैंप में तेरापंथ युवक परिषद उत्तर कोलकाता के अध्यक्ष मनीष बरड़िया और मंत्री प्रदीप हिरावत की उपस्थिति में कुल 41 यूनिट रक्त संग्रहित किया गया।

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन

जैन विधि-अमूल्य निधि

नूतन गृह प्रवेश

■ **गाँधीनगर दिल्ली।** श्रीडूंगरगढ़ निवासी, दिल्ली कृष्णानगर प्रवासी जतन-हेमा श्यामशुखा के नूतन गृह प्रवेश संस्कारक प्रकाश सुराणा व अशोक सिंघी ने पूरे विधि विधान व मंगल मंत्रोच्चार से सानन्द संपादित करवाया।

■ **भीलवाड़ा।** रविन्द्र कुमार पाटनी के नवनिर्मित निवास का गृह प्रवेश संस्कार जैन संस्कारक अशोक सिंघवी ने विधि पूर्वक संपन्न करवाया।

■ **बेंगलुरु।** प्रदीप चोपड़ा के नूतन प्रतिष्ठान कंचन एक्सपो का शुभारंभ जैन संस्कारक आदित्य मांडोत द्वारा जैन संस्कार विधि से संपादित किया गया।

■ **दिल्ली।** लाडनूं निवासी दिल्ली प्रवासी अरविंद दुगड़ (सुपुत्र अशोक दुगड़) का नूतन गृहप्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक मनीष बरमेचा एवं अरविंद गोलछा ने सम्पूर्ण विधि विधान व मंगल मंत्रोच्चार से सानन्द संपन्न करवाया।

■ **उधना।** सोहनलाल दिनेश कुमार भाविक कुमार बाबेल के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि द्वारा संस्कारक जसवंत कुमार डांगी व अनिल कुमार सिंघवी ने सम्पन्न करवाया।

"जानो मानो पहचानो" कार्यशाला का आयोजन

राजाजीनगर।

साध्वी संयमलताजी के सान्निध्य में 'जानो मानो पहचानो' कार्यशाला की शुरुआत साध्वीश्री के नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुई। साध्वीश्री ने धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहा- जीवन का आनंद कहीं बाहर नहीं बल्कि मनुष्य के अपने ही भीतर है। मनुष्य निज की खोज, निज की पहचान, निज का प्रकाश और निज का ज्ञान करके अपने जीवन को सफल बनाएँ। मनुष्य को बाहरी स्वच्छता का ध्यान प्रतिक्षण रहता है, परंतु वह भीतर जन्मों से जमे हुए क्रोध, मान, लोभ के कचरे को साफ़ करने का प्रयास नहीं करता। मूर्च्छा को तोड़ आत्मसाधना के प्रति सजग बने।

साध्वीश्री ने हाजरी का वाचन करते हुए मर्यादा व आज्ञा से संबंधित इतिहास के प्रेरक प्रसंग सुनाए। साध्वी मार्दवश्रीजी ने कहा भीतर में लगे कैमरे से व्यक्ति अपनी फोटो खींच कर उसी के अनुरूप एक्शन करने का प्रयास करते हुए आत्मा की उन्नति करे। चारों साध्वियों ने लेखपत्र का वाचन किया। जुगराज श्रीश्रीमाल ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन करवाया। इस अवसर पर राजाजीनगर सभा अध्यक्ष अशोक चौधरी, युवक परिषद अध्यक्ष कमलेश चौरड़िया, महिला मंडल अध्यक्ष उषा चौधरी के साथ श्रावक समाज की अच्छी उपस्थिति रही।

भीतरी विजय हेतु नया प्रस्थान करें

पालघर, मुंबई।

तेरापंथ भवन में प्रोफेसर साध्वी मंगलप्रज्ञाजी के सान्निध्य में नववर्ष विक्रम संवत् 2082 के शुभागमन पर आध्यात्मिक शुभकामना कार्यक्रम का आयोजन तेरापंथ सभा, पालघर द्वारा किया गया। इस अवसर पर उपस्थित विशाल जैन तेरापंथ समाज को उद्बोधन प्रदान करते हुए प्रो. साध्वी मंगलप्रज्ञा जी ने कहा- आज नवसंवत्सर का प्रथम सूर्य नए संकल्पों के साथ उदित हुआ है। महाराष्ट्र प्रान्त में आज विशेष पारम्परिक उत्सव का भी दिन है। गुडी पडवा का अर्थ होता है- विजय की पताका। बाहरी विजय प्राप्ति की दिशा में अधिकतर लोगों का प्रयास रहता है। आवश्यकता है कि हम भीतरी विजय हेतु नया प्रस्थान करें। आन्तरिक शक्ति, शांति और आनन्द की उपलब्धि के लिए नवीन संकल्प और सृजनकारी पुरुषार्थ करें। हम सौभाग्यशाली हैं कि हमने विजेताओं के धर्म को प्राप्त किया है। हम आत्मविजयी बनें। जीवन की खामियों को पहचान कर उन्हें कम करने का प्रयास करें।

साध्वीश्री ने परिषद को विशेष प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा- हर व्यक्ति वार्षिक संकल्प करें जब भी क्रोध आए तो कूल-कूल की अनुप्रेक्षा करें। पालघर में नववर्ष पर वृहद मंगल पाठ का आयोजन सबके लिए हितकारी हो। संघ की उन्नति के लिए हम निरन्तर शक्ति का नियोजन करते रहें। गुरु दृष्टि की आराधना करते हुए कदम-दर-कदम आगे बढ़ते रहें।

इससे पूर्व प्रो. साध्वी मंगलप्रज्ञा जी के नमस्कार मंत्रोच्चार के साथ कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। साध्वी सुदर्शनप्रभा जी और साध्वी अतुलयशा जी ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। नववर्ष के शुभागभन पर प्रेरणा गीत का संगान साध्वी वृन्द ने किया। पालघर, तेरापंथ सभा अध्यक्ष चतर तलेसरा ने स्वागत स्वर प्रस्तुत किए। तेरापंथ युवक परिषद कांदिवली अध्यक्ष राकेश सिंघवी और मलाड तेयुप अध्यक्ष जयन्ती मादरेचा ने विचार प्रस्तुत किए।

साध्वी राजुल प्रभा जी ने कहा- नए वर्ष में हमें नए निर्माण का संकल्प लेना है। अपनी सोच को मंगलमय बनाना है। उन हाथों को भी नमन करना है, जिन्होंने हमारा निर्माण किया है। पालघर, तेरापंथ सभा मंत्री दिनेश राठौड़ ने आभार जताया। साध्वी डॉ शौर्य प्रभा जी ने कार्यक्रम का कुशल संचालन किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
14 अप्रैल - 20 अप्रैल, 2025

संबोधि

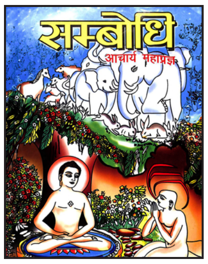

गृहिधर्मचर्या

-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

५२. सपापं हृदयं यस्य, जिह्वा मधुरभाषिणी।
उच्यते विषकुम्भः स, नूनं मधुपिधानकः।।

जिस व्यक्ति का हृदय पाप-सहित है, किन्तु जिसकी जिह्वा मधुरभाषिणी है, वह विषकुंभ है और मधु के ढक्कन से ढंका हुआ है।

५३. सपापं हृदयं यस्य, जिव्हा कटुकभाषिणी।
उच्यते विषकुम्भः स, नूनं विषपिधानकः ॥

जिस व्यक्ति का हृदय पाप-सहित है और जिसकी जिह्वा कटुभाषिणी है, वह विषकुंभ है और विष के ढक्कन से ढंका हुआ है।

कुम्भ चार प्रकार के होते हैं:

१. मधुकुम्भ मधुढक्कन।

२. मधुकुम्भ विषढक्कन।

३. विषकुम्भ मधुढक्कन।

४. विषकुम्भ विषढक्कन।

इसी प्रकार मनुष्य चार प्रकार के होते हैं:

१. शुद्ध हृदय मधुरभाषी।

२. अशुद्ध हृदय कटुभाषी।

३. शुद्ध हृदय कटुभाषी।

४. अशुद्ध हृदय मधुरभाषी।

महावीर को 'संगम' देवता ने छह महीने तक यंत्रणाएं, ताड़णाएं और मारणांतिक कष्ट दिये। महावीर मौन-शांत सब सहते गये। अंत में देवता थक गया। जब जाने लगा तब अपने असद् व्यवहार की क्षमा मांगी। महावीर ने कहा- तुमने अपना काम किया और मैंने अपना काम किया। असाधु असाधु के सिवाय और क्या कर सकता है? तथा साधु साधुता से अन्यथा व्यवहार नहीं कर सकता। मुझे दुःख है कि मेरा जीवन विश्व कल्याण के लिए है और तुम मेरे ही कारण अपना पतन कर रहे हो।

(क्रमशः)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ की तपस्वी साध्वियां

आचार्यश्री भारमल जी युग

साध्वीश्री नोजांजी (बोरावड़) दीक्षा क्रमांक 98

साध्वीश्री स्वभाव से सरल और कोमल थी। आपने स्फुटकर अनेक तपस्याएं की पर उनका विवरण प्राप्त नहीं होता। आपने शीतकाल में शीत सहन किया। अन्तिम में संथारा कर आराधक पद प्राप्त किया।

– साभार: शासन समुद्र –

श्रमण महावीर

संघ - व्यवस्था

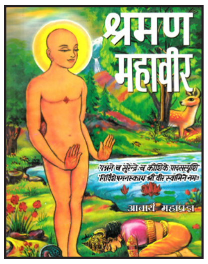

भगवान् साधना-काल में तंतुवायशाला में ठहरे हुए थे। उस समय गोशालक ने कहा- 'भन्ते! मैं आपके लिए भोजन लाऊं?' भगवान् ने इस अनुरोध को अस्वीकार कर दिया। भगवान् गृहस्थ के पात्र में भोजन न करने का संकल्प कर चुके थे। इसीलिए भगवान् ने गोशालक की बात स्वीकार नहीं की। भगवान् भिक्षा के लिए स्वयं गृहस्थों के घर में जाते और वहीं खड़े रहकर भोजन कर लेते। तीर्थ स्थापना के बाद भगवान ने मुनि को एक पात्र रखने की अनुमति दी। अब मुनिजन पात्रों में भिक्षा लाने लगे भगवान् के लिए भिक्षा लाने का अवकाश ही नहीं रहा। गणधर गौतम ने भगवान् के लिए भिक्षा लाने की व्यवस्था कर दी। मुनि लोहार्य इस कार्य में नियुक्त थे। भगवान् उनके द्वारा लाया हुआ भोजन करते थे। एक आचार्य ने उनकी स्तुति में लिखा है-

धन्य है वह लोहार्य श्रमण,

परम सहिष्णु कनक-गौरवर्ण।

जिसके पात्र में लाया हुआ आहार

भगवान् खाते थे, अपने हाथों से।

अभिवादन

'अभिवादन के विषय में भगवान् की दो दृष्टियां प्राप्त होती हैं- साधुत्वमूलक और व्यवस्थामूलक। पहली दृष्टि के अनुसार साधुत्व वंदनीय है। जिस व्यक्ति में साधुत्व विकसित है वह साधु हो या साध्वी, सबके लिए वंदनीय है। दूसरी दृष्टि के अनुसार भगवान् ने व्यवस्था की दीक्षा-पर्याय में छोटा साधु या साध्वी दीक्षा-पर्याय में ज्येष्ठ साधु या साध्वी का अभिनन्दन करे।

साधु-साध्वियों के परस्पर अभिवादन के विषय में भगवान् ने क्या निर्देश दिया, यह उनकी वाणी में उपलब्ध नहीं है। उत्तरवर्ती साहित्य में मिलता है कि सौ वर्ष की दीक्षित साध्वी आज के दीक्षित साधु को वंदना करे। क्योंकि धर्म का प्रवर्तक पुरुष है, धर्म का उपदेष्टा पुरुष है, पुरुष ज्येष्ठ है लौकिक पथ में भी पुरुष प्रभु होता है, तब लोकोत्तर पथ का कहना ही क्या?

उस समय लोकमान्यता के अनुसार पुरुष की प्रधानता थी। बहुत सारे धार्मिक संघ भी पुरुष को प्रधानता देते थे। बौद्ध साहित्य से यह स्पष्ट होता है। महाप्रजापति गौतमी ने आयुष्मान् आनन्द का अभिवादन कर कहा, 'भंते आनन्द ! मैं भगवान् से एक वर मांगती हूं। अच्छा हो भंते! भगवान् भिक्षुओं और भिक्षुणियों में परस्पर दीक्षा-पर्याय की ज्येष्ठता के अनुसार अभिवादन, प्रत्युत्थान, हाथ जोड़ने और सत्कार करने की अनुमति दे दें।'

आनन्द ने यह बात बुद्ध से कही। तब भगवान् बुद्ध ने कहा, 'आनन्द! इसकी जगह नहीं, इसका अवकाश नहीं कि तथागत स्त्रियों को अभिवादन, प्रत्युत्थान, हाथ जोड़ने और सत्कार करने की अनुमति दें।'

'आनन्द ! जिनका धर्म ठीक से नहीं कहा गया है, वे तीर्थिक (दूसरे मत वाले साधु) भी स्त्रियों को अभिवादन, प्रत्युत्थान, हाथ जोड़ने और सत्कार करने की अनुमति नहीं देते तो भला तथागत स्त्रियों को अभिवादन, प्रत्युत्थान, हाथ जोड़ना और सत्कार नहीं करना चाहिए, जो करे उसे उत्कट का दोष हो।'

भगवान् महावीर का दृष्टिकोण स्त्रियों के प्रति बहुत उदार था। साधना के क्षेत्र में उन्हें पूर्ण स्वतंन्त्रता प्राप्त थी। समता का प्रयोग स्त्री पुरुष दोनों पर समान रूप से चलता था। अतः यह कल्पना करने को मन ललचाता है कि भगवान् ने अभिवादन की स्वतन्त्र व्यवस्था की। उसका आशय था-

१. दीक्षा-पर्याय में छोटा साधु ज्येष्ठ साधु का अभिवादन करे।

२. दीक्षा-पर्याय में छोटी साध्वी ज्येष्ठ साध्वी का अभिवादन करे।

(क्रमशः)

धर्म है उत्कृष्ट मंगल

-आचार्यश्री महाश्रमण

दुःख का कारण : राग

जस्सत्थि मच्चुणा सक्खं, जस्स वऽत्थि पलायणं।
जो जाणे न मरिस्सामि सो हु कंरवे सुए सिया।।

एक वह जिसकी मौत के साथ दोस्ती हो गई है। दूसरा वह जो दौड़ने में कुशल हो, मौत आएगी तो मैं दौड़कर भाग जाऊंगा। वह मुझे पकड़ भी नहीं पाएगी, इस प्रकार सोचने वाला। तीसरा वह व्यक्ति जो जानता हो मैं कभी मरूंगा ही नहीं। ये तीन प्रकार के व्यक्ति बाद में धर्म करने की बात सोच सकते हैं। किन्तु ऐसा कभी हुआ नहीं, होगा भी नहीं कि मौत के साथ दोस्ती कर ले या मौत उसे माफ कर दे। यह Universal law (सार्वभौम नियम) है। इसका उल्लंघन कभी नहीं हो सकता। जो जन्मा है, उसकी मृत्यु निश्चित है। इन दुःखों के कारण ही मनुष्य में धर्म की प्रेरणा जागती है। मौत से बचने के लिए आदमी चाहे कुछ भी यत्न कर ले, पर मौत कभी भी उसे नहीं छोड़ती। जन्म लिया है तो उसे एक दिन मरना ही पड़ेगा। व्यक्ति चाहे पहाड़ पर चढ़ जाए, समुद्र को लांघ ले, सभी उपाय कर ले, फिर भी मौत उसका पीछा नहीं छोड़ेगी।

यह जानकर व्यक्ति को अपने जीवन के बारे में सोचना चाहिए। जब आदमी को भयंकर बीमारियां घेर लेती हैं तब कौन उसे त्राण देता है? सेवा करने वाले सेवा कर सकते हैं पर पीड़ा को कौन कम करे, दूर करे? गृहस्थावस्था में अनाथी मुनि को जब आंख की वेदना हुई, बहुत से वैद्य बुलवाए गए। परिजन सब पास में बैठे थे पर वेदना दूर नहीं हो सकी? जब यह संसार की स्थिति देखी तब मन में संकल्प जागा अगर मेरी पीड़ा दूर हो जाए तो मैं मुनि बन जाऊंगा, दीक्षा ले लूंगा। यह संकल्प किया तो वेदना शांत होने लगी और वेदना शान्त होने के बाद वे साधु बन गए, साधना में लग गए।

भगवान बुद्ध के जीवन का उदाहरण है-

बुद्ध ने बीमार को देखा, बूढ़े को देखा, मुर्दे को देखा और साधु को देखा तो वैराग्य जाग गया और उन्होंने राजमहल छोड़ दिया, साधना करने लगे। जब व्यक्ति के सामने संसार की वास्तविक स्थिति आती है तो वैराग्य जाग जाता है। किन्तु वैराग्य भी कई प्रकार का होता है। अपेक्षा इस बात की है जो वैराग्य जागे वह स्थायी बन जाए। आदमी को अपना जीवन निष्पाप, निष्कलंक और सादगीपूर्ण बिताना चाहिए। मैं पाप करूंगा तो पाप का फल मुझे ही भोगना पड़ेगा और एक दिन संसार छोड़कर जाना पड़ेगा। अगर यह बात दिमाग में बैठ जाए तो व्यक्ति ज्यादा पाप कर नहीं सकता। इसलिए ऋषियों ने कहा-व्यक्ति जीवन की सच्चाई को समझे कि सबको मरना है, कर्म के फल भोगने हैं, इसलिए हम धर्मध्यान में लगें। धर्म दो प्रकार का होता है एक है काल-प्रतिबद्ध धर्म। दूसरा है कालातीत धर्म।

सामायिक करना, पौषध करना, व्याख्यान सुनना, उपवास करना ये सारे कालप्रतिबद्ध धर्म के अन्तर्गत आते हैं। क्षमा का अभ्यास करना, सरलता रखना, समता रखना, किसी के बारे में बुरा न सोचना, धोखा न देना ये सारे कालातीत धर्म के अन्तर्गत आते हैं। कालातीत धर्म का अर्थ है हर समय किया जाने वाला धर्म।

धर्म के सहारे ही व्यक्ति अपने जीवन को शान्ति और सुख से बिता सकता है। जो व्यक्ति अपने पवित्र जीवन की पवित्रता के प्रति जागरूक रहता है, वह पाप से बच सकता है, दुःख से बच सकता है। आगमों में कहा है-

कामाणुगिद्धिप्पभवं खु दुक्खं, सव्वस्स लोगस्स सदेवगस्स।
जं काइयं माणसियं च किंचि, तस्सन्तगं गच्छइ वीयरागो।।

चाहे मनुष्य हो या देवता हो, उनके जो भी शारीरिक या मानसिक दुःख होते हैं उसका मूल कारण है-राग। काम और भोग दो शब्द हैं। श्रोत्रेन्द्रिय और चक्षुइन्द्रिय के विषय काम कहलाते हैं। घ्राणेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय, स्पर्शनेन्द्रिय इनके विषय भोग कहलाते हैं। अर्थात् जिनका शरीर के साथ जिनका सीधा संपर्क होता है उन्हें भोग कहते हैं। जिनका प्रकट रूप से सीधा संपक नहीं होता उन्हें काम कहते हैं। काम और भोग दोनों ही दुःख का कारण बनते हैं। आदमी की लालसा, इच्छा कभी पूरी नहीं होती है। जिस वस्तु के साथ राग का संस्कार जुड़ जाता है, उसे छोड़ना कठिन हो जाता है। वैसे तो सभी प्राणी सुख को चाहने वाले होते हैं, दुःख कोई भी नहीं चाहता। जब तक आदमी सच्चे सुख का रास्ता नहीं खोजेगा तब तक उसे सच्चा सुख नहीं मिल सकता।

(क्रमशः)

संघीय समाचारों का मुखपत्र

तेरापंथ टाइम्स
की प्रति पाने के लिए क्यूआर
कोड स्कैन करें या आवेदन करें
https://abtyp.org/prakashan

समाचार प्रकाशन हेतु
abtyptt@gmail.com पर ई-मेल अथवा
8905995002 पर व्हाट्सअप करें।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

अप्रैल 2025
सप्ताह के विशेष दिन

23 अप्रैल भगवान नमिनाथ निर्वाण कल्याणक	**26 अप्रैल** भगवान अनंतनाथ जन्म कल्याणक
26 अप्रैल भगवान अनंतनाथ दीक्षा एवं केवलज्ञान भगवान कुन्थुनाथ जन्म कल्याणक	**27 अप्रैल** पक्खी

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्यश्री डालमचन्दजी युग

मुनिश्री कनकमलजी (पुर) दीक्षा क्रमांक 347

मुनिश्री प्रकृति से सरल, विनयी और बड़े आत्मार्थी थे। तपश्चर्या में अच्छी दिलचस्पी रखते। आपके तप की तालिका इस प्रकार है- उपवास/1944, 2/146, 3/5, 4/4, 5/5। कुल दिन-2292, जिनके 6 वर्ष 4 महिने 12 दिन होते है।

– साभार: शासन समुद्र –

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
14 अप्रैल - 20 अप्रैल, 2025

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

समाचार प्रेषकों से निवेदन

1. संघीय समाचारों के साप्ताहिक मुखपत्र **'अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स'** में धर्मसंघ से संबंधित समाचारों का स्वागत है।
2. समाचार साफ, स्पष्ट और शुद्ध भाषा में टाइप किया हुआ अथवा सुपाठ्य लिखा होना चाहिए।
3. कृपया किसी भी न्यूज पेपर की कटिंग प्रेषित न करें।
4. समाचार मोबाइल नं. **8905995002** पर व्हाट्सअप अथवा **abtyptt@gmail.com** पर ई-मेल के माध्यम से भेजें।

समाचार पत्र ऑनलाइन पढ़ने के लिए नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें।
https://terapanthtimes.org/

:: निवेदक ::
सेवा संस्कार संगठन
अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

व्यक्तित्व विकास कार्यशाला 'घर बने स्वर्ग' का आयोजन

गांधीनगर, दिल्ली।

अभातेयुप के तत्वावधान में तेयुप गांधीनगर दिल्ली द्वारा व्यक्तित्व विकास कार्यशाला 'घर बने स्वर्ग' का आयोजन अभातेयुप राष्ट्रीय उपाध्यक्ष जयेश मेहता की अध्यक्षता में हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत नवकार मंत्र के सामूहिक मंत्रोच्चार से हुई। तत्पश्चात तेयुप गांधीनगर दिल्ली द्वारा विजय गीत का संगान किया गया। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन राष्ट्रीय उपाध्यक्ष जयेश मेहता ने किया। राष्ट्रीय उपाध्यक्ष मेहता ने अध्यक्षीय वक्तव्य में नवगठित तेयुप गांधीनगर दिल्ली में पहली बार सफल व्यक्तित्व विकास कार्यशाला आयोजित करने की बधाई देते हुए विशेष प्रेरणा दी कि सभी अपने परिवार को स्वर्ग बनाने का प्रयास करें। तेयुप अध्यक्ष अशोक सिंघी ने सबका स्वागत व अभिनंदन किया व अहमदाबाद से समागत मोटिवेशनल स्पीकर दिनेश बुरड़ का स्वागत किया। मुख्य वक्ता दिनेश बुरड़ ने अपनी शैली में विभिन्न उदाहरणों एवं प्रयोगों द्वारा घर को स्वर्ग बनाने के उपाय बताए। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि रणजीत सिंह भंसाली ने अपने वक्तव्य में परिषद् को बधाई देते हुए कहा कि ऐसी कार्यशाला समय-समय पर आयोजित होनी चाहिए जिससे घरों में चल रहे मनमुटाव को मिटाया जा सके। विशिष्ट अतिथि संपतमल सेठिया ने भी इस कार्यशाला की सराहना की। शाखा प्रभारी अंकुर लुणिया ने अपने विचार व्यक्त किए और साथ ही नवगठित परिषद् ने जो कार्य किए उससे सबको अवगत करवाया। दिल्ली सभा अध्यक्ष सुखराज सेठिया ने गांधीनगर दिल्ली परिषद् की सराहना करते हुए मंगलकामना व्यक्त की। इस अवसर पर अभातेयुप से प्रवृति सलाहकार जतन श्यामसुखा, राजेश जैन, अभातेयुप, महासभा, विकास मंच, गांधीनगर सभा, महिला मंडल, अणुव्रत समिति सहित विभिन्न सभा संस्थाओं के पदाधिकारीगण एवं तेयुप साथियों की गरिमामय उपस्थिति रही। कार्यशाला संयोजक अंकित सुराणा, जितेंद्र बोथरा, मुकेश बैद, विनीत सेठिया के साथ प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से तेयुप के सभी कार्यकर्ताओं का विशेष श्रम रहा। कार्यशाला संयोजक विनीत सेठिया ने सबका आभार ज्ञापन किया। कार्यशाला का मंच संचालन तेयुप गांधीनगर दिल्ली मंत्री प्रकाश सुराणा ने किया।

श्रावक की चौथी प्रतिमा का हुआ स्वीकरण

सिकंदराबाद।

आचार्य श्री महाश्रमण की सुशिष्या साध्वी डॉ. गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में 'चौथी पडिमा प्रत्याख्यान' का भव्य कार्यक्रम रमेश संचेती के निवास के विशाल प्रागंण में रखा गया। माधावरम, चेन्नई से समागत माणकचंद रांका ने श्रावक की चौथी प्रतिमा स्वीकार की। साध्वी डॉ. गवेषणाश्रीजी ने कहा - जैन आगमों में अनेक प्रकार की श्रावक की भूमिकाओं का वर्णन आता है, जैसे सुलभ बोधि श्रावक, पडिमाधारी श्रावक आदि। पडिमाधारी का अर्थ है- प्रतिज्ञा या अभिग्रह। साधना की दृष्टि से विशेष प्रकार की प्रतिज्ञा स्वीकार कर निश्चित कालावधि तक उनका पालन किया जाता है।

जैन आगमों में पड़िमा को 3 भागों में वर्गीकृत किया है, प्रथम छः पडिमाओं को धारण करनेवाला उत्कृष्ट श्रावक, सात से नौ तक ब्रह्मचारी और शेष दो धारण करने वाला भिक्षुक कहलाता है। माणकचंद रांका आज तीसरी पडिमा संपन्न कर चौथी पडिमा स्वीकार कर रहे है। ये प्रेक्षा प्रशिक्षक, सेवाभावी, श्रद्धाशील और निःस्पृह साधक है।

साध्वी मेरुप्रभाजी ने जीवन-चरित्र से संबंधित गीतिका प्रस्तुत की। साध्वी दक्षप्रभा जी ने पडिमा से संबंधित भावपूर्ण सुमधुर संगान किया। केशर रांका एवं चेतना रांका ने विचार रखे। कार्यक्रम की शुरुआत सुजाता संचेती परिवार के मंगलाचरण से हुई। स्वागत भाषण रमेश संचेती ने दिया। तेरापंथ सभा अध्यक्ष सुशील संचेती, चेन्नई से समागत सुरेश रांका, निष्ठा रांका, कुलदीप रांका ने अपने विचार रखें। युवक परिषद् से अभिनन्दन नाहटा, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम से वीरेन्द्र घोषल, सभामंत्री हेमंत संचेती, महिला मंडल मंत्री सुशीला मोदी ने विचार रखे। बाबुलाल बैद ने अभिनन्दन पत्र का वाचन किया। धन्यवाद ज्ञापन विनोद संचेती ने किया।

संक्षिप्त खबर

संकल्पों का कल्पवृक्ष कार्यक्रम का आयोजन

हैदराबाद। तेरापंथ किशोर मंडल, एपिसोड हैदराबाद द्वारा संकल्पों का कल्पवृक्ष कार्यक्रम का सफल आयोजन किया गया। इस विशेष पहल के अंतर्गत प्रतिभागियों ने विक्रम संवत् 2082 नव वर्ष के शुभ दिन साध्वीश्री गवेषणाश्रीजी के सान्निध्य में एक वर्ष तक विभिन्न संकल्पों को अपनाने का संकल्प लिया। कार्यक्रम में 18 प्रेरणादायी संकल्पों की प्रस्तुति दी गई, जिनमें उपवास, मौन, सामायिक, ध्यान और अध्ययन जैसी आध्यात्मिक एवं आत्म-संयम की गतिविधियाँ शामिल रहीं।

संकल्प लेने की प्रक्रिया को प्रोत्साहित करने हेतु संकल्प वृक्ष पर संकल्प पत्र लगाए गए, जिससे उपस्थित जन प्रेरित हुए।

यह कार्यक्रम तेरापंथ युवक परिषद, हैदराबाद के मार्गदर्शन में आयोजित किया गया व कन्या मंडल, हैदराबाद का पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ। इस कार्यक्रम में किशोरों की अच्छी सहभागिता रही।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस करें सही उपयोग

राजाजीनगर।

साध्वी संयमलताजी के सान्निध्य में तेरापंथ युवक परिषद राजाजीनगर के निर्देशन में तेरापंथ किशोर मण्डल द्वारा स्थानीय तेरापंथ सभा भवन में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस कार्यशाला का आयोजन किया गया।

साध्वी मार्दवश्रीजी ने नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से कार्यक्रम की शुरुआत की। साध्वीश्री ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर अपने विचार व्यक्त किए। राजाजीनगर तेयुप अध्यक्ष कमलेश चौरड़िया ने सभी का स्वागत करते हुए अपने विचार व्यक्त किए। किशोर मंडल के सदस्य एवं AI TOOLS कार्यशाला के ट्रेनर आर्यन गोलेच्छा ने सरलता पूर्वक आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की जानकारी दी। आर्यन ने AI का मतलब समझाते हुए उससे होने वाले उपयोग एवं उसके दुरुपयोग को कई उदाहरणों के माध्यम से समझाया। कार्यक्रम में उपस्थित सभी किशोर मण्डल सदस्यों एवं कन्या मण्डल की सदस्याओं को एक्टिविटी एवं गेम के माध्यम से AI की विस्तृत जानकारी दी। इस अवसर पर तेयुप अध्यक्ष कमलेश चौरड़िया, सभा अध्यक्ष अशोक चौधरी, जयंतीलाल गांधी, अनिमेष चौधरी, किशोर मंडल एवं कन्या मंडल सदस्यों की उपस्थिति रही। आभार किशोर मंडल के संयोजक नमन श्रीश्रीमाल ने दिया।

266वें भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस पर विविध कार्यक्रम

पॉजिटिव एवं पीसफुल थे भिक्षु

बैंगलोर। शांतिनगर स्थित हेरिटेज अपार्टमेंट में साध्वी पावनप्रभाजी के सान्निध्य में श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा द्वारा निर्देशित 266 वां भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस का आयोजन तेरापंथ सभा गांधीनगर बैंगलोर द्वारा किया गया। साध्वी पावनप्रभाजी जी के द्वारा नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ।

कार्यक्रम दो चरणों में आयोजित हुआ। प्रथम चरण में 45 मिनट 'भिक्खू स्याम' का सवा लाख जप अनुष्ठान करवाया गया। द्वितीय चरण में मंगलाचरण शांति नगर की बहनों द्वारा किया गया। साध्वी पावनप्रभा जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि आज रामनवमी है। आज के दिन राम का जन्म हुआ था।

आचार्य भिक्षु ने भी अभिनिष्क्रमण किया और तेरापंथ का जन्म हो गया। तेरापंथ धर्मसंघ आचार्य भिक्षु की धर्म क्रांति का प्रतिफल है। 'प्रसन्नात्मा भिक्षु नयनमवतारम नयतु मे' का विवेचन करते हुए साध्वीश्री ने कहा - भिक्षु हर परिस्थिति में प्रसन्न रहे। अनुकूल व प्रतिकूल परिषहों को अपने फौलादी संकल्पों से सहन किया। उनका जीवन पॉजिटिव एवं पीसफुल था। साध्वी उन्नतयशा जी ने वक्तव्य के माध्यम से अपने विचार व्यक्त किए। साध्वी रम्यप्रभाजी ने कविता के माध्यम से अपने भाव व्यक्त किए। साध्वीवृन्द ने समवेत स्वरों से सामूहिक गीतिका की प्रस्तुति दी। सभा अध्यक्ष पारसमल भंसाली ने स्वागत वक्तव्य दिया। सभा मंत्री विनोद छाजेड़ ने साध्वीश्री जी के प्रति कार्यक्रम में सानिध्य प्रदान कराने हेतु कृतज्ञता ज्ञापित की। इस अवसर पर अरुणा संचेती ने अपने विचार व्यक्त किए। मंत्री राकेश चोरड़िया ने आभार व्यक्त किया।अर्चना सुराणा एवं ममता घोषल के निर्देशन में ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा सुंदर नाटिका प्रस्तुति दी गई। कार्यक्रम संयोजक जितेंद्र घोषल ने कुशल संचालन किया। तेरापंथ युवक परिषद इस अवसर पर महासभा से गौतम सेठिया, युवक परिषद अध्यक्ष विमल धारीवाल, कमलेश झाबक एवं श्रावक-श्राविका समाज उपस्थित थे।

266वां अभिनिष्क्रमण दिवस पर कार्यक्रम

इरोड। स्थानीय तेरापन्थ भवन में 266वां अभिनिष्क्रमण दिवस आयोजित हुआ। केन्द्र द्वारा निर्देशित कार्यक्रम में तेरापंथ धर्मसंघ व आचार्य श्री भिक्षु के जीवन दर्शन पर आधारित वक्तव्य, गीत, कविता आदि की प्रस्तुतियां दी गई। सभा अध्यक्ष जवेरीलाल भंसाली ने स्वागत भाषण दिया। उपासक प्रकाश पारख, वीणादेवी भूतोडिया, भारतीदेवी डागा, उपासक हनुमानमल दुग्गड, सुरेन्द्र भंडारी ने तेरापंथ की स्थापना, भिक्षु स्वामी की संयम साधना व उनके जीवन में घटित घटनाओं आदि का वर्णन किया। आभार ज्ञापन सभा के मंत्री दुलीचंद पारख ने दिया।

सामूहिक सामायिक

जोगेश्वरी, मुंबई। श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा जोगेश्वरी द्वारा आचार्य भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस का सामूहिक सामायिक के साथ आयोजन किया गया। सभा अध्यक्ष दिनेश सिंघवी, महिला मंडल अध्यक्ष आशा कच्छारा पदाधिकारी एवं पूरे समाज से सराहनीय उपस्थिति रही।

आचार्य भिक्षु ने की नई क्रांति

जसोल। आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या 'शासनश्री' साध्वी जिनरेखाजी के सान्निध्य में आचार्य भिक्षु का अभिनिष्क्रमण दिवस मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वी मार्दवयशाजी ने अपने गीत के माध्यम से की। 'शासनश्री' साध्वी जिनरेखा जी अपने उद्बोधन में कहा कि आचार्य भिक्षु ने विक्रम संवत 1817 चैत्र शुक्ला नवमी को स्थानकवासी सम्प्रदाय से अभिनिष्क्रमण किया। आचार विचार की शिथिलता के कारण आचार्य भिक्षु ने नई क्रांति की। वे किसी नये संघ को चलाने के उद्देश्य से अलग नहीं हुए। इसलिए उन्होंने नामकरण की कल्पना ही नहीं की, पर जोधपुर में अनायास ही संघ तेरापंथ के नाम से प्रसिद्ध हो गया। आचार निष्ठा, अनुशासन और संगठन तेरापंथ धर्मसंघ के मूलभूत आधार हैं। इसी दिन तेरापंथ का बीज वपन हुआ था जो आज वटवृक्ष का रूप ले रहा है। साध्वी मधुरयशाजी ने आचार्य भिक्षु के कर्तव्य, व्यक्तित्व को उजागर किया। कार्यक्रम का सफल संचालन साध्वी श्वेतप्रभा जी ने किया। इस अवसर पर तेरापंथ सभा अध्यक्ष भूपतराज कोठारी, पदाधिकारी सहित जसोल तेरापंथ समाज के सदस्य उपस्थित थे।

आचार विचार के पालन के लिए तत्पर थे भिक्षु

राजलदेसर। 'शासनश्री' साध्वी मानकुमारी जी ने 266वें भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा - आचार्य भिक्षु महान थे, आज के दिन उन्होंने एक धर्म क्रांति की। भगवान महावीर की आगम वाणी पर उनकी अटूट श्रद्धा थी। वे शुद्ध आचार विचार का पालन करने के लिए तत्पर थे।

वे ऐसे वीर पुरुष थे जो कभी संघर्षों से विचलित नहीं हुए बल्कि सत्य के राजमार्ग पर अविचल बढ़ते रहे। 'आत्मा रा कारज सारस्या मर पूरा देस्यां' उनका यह चिंतन उनकी आध्यात्मिक निर्मलता को प्रकट करता है।

हम आचार्य भिक्षु के पद चिन्हों पर आगे बढ़ते हुए आत्मा को उज्ज्वल बनाते रहें। इस अवसर पर ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने 'अलबेले भिक्षु' पर सुंदर प्रस्तुति प्रस्तुत की। साध्वी कीर्तिरेखा जी, साध्वी स्नेहप्रभा जी, साध्वी कमलयशा जी व साध्वी चैत्यप्रभा जी ने गीत व वक्तव्य के द्वारा अपने आराध्य की अभ्यर्थना की।

तेरापंथ महिला मंडल की मंत्री रीना बैद, प्रेमदेवी विनायक, हेमलता बैद, मोनिका बैद, ममता कुंडलिया तथा भानुप्रिया दुगड़ ने भावाभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का शुभारंभ कन्या मंडल ने भिक्षु अष्टकम् से किया।

कार्यक्रम का कुशल संयोजन साध्वी इन्दुयशा जी ने किया।

सप्त दिवसीय 'योगा से होगा' शिविर संपन्न

गांधीनगर, दिल्ली।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद् गांधीनगर दिल्ली द्वारा आयोजित विशेष योग शिविर के सातवें दिवस का शुभारंभ तेरापंथ भवन, विकास मंच के प्रांगण में नमस्कार महामंत्र के सामूहिक उच्चारण के साथ हुआ।

इस अवसर पर योग प्रशिक्षक विनोद नाहटा ने विभिन्न योगिक क्रियाएं करवाई, साथ ही सभी को योग से निरन्तर जुड़े रहने की विशेष प्रेरणा दी।

तेयुप गांधीनगर दिल्ली अध्यक्ष अशोक सिंघी ने इस योग शिविर में उपस्थित सभी महानुभावों का स्वागत किया। मंत्री प्रकाश सुराणा ने आह्वान किया कि इस योग शिविर का समापन समारोह रखा गया है लेकिन यह निरन्तर भवन में चले, ऐसा प्रयास करेंगे। इस योग शिविर में विकास मंच ट्रस्टी दिनेश डूंगरवाल, गांधीनगर दिल्ली सभा के अध्यक्ष निर्मल छलाणी, अभातेयुप प्रवृत्ति सलाहकार व परामर्शक जतन श्यामशुखा, परामर्शक मनोज बैद, पदाधिकारी, फिट युवा हिट युवा के प्रभारी किशोर सेठिया, परिषद् के युवा साथियों, किशोर मंडल सदस्यों व क्षेत्र के श्रावक समाज की अच्छी सहभागिता रही। योग शिविर के अंतिम दिवस पर लगभग 45 जनों की सहभागिता रही।

ज्ञानशाला वार्षिकोत्सव का आयोजन

साउथ हावड़ा।

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, साउथ हावड़ा के निर्देशन में साउथ हावड़ा ज्ञानशाला वार्षिकोत्सव का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के संगान से हुआ। ज्ञानशाला के बच्चों ने अर्हम् वंदना से मंगलाचरण किया। सभा के अध्यक्ष लक्ष्मीपत बाफना ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में ज्ञानशाला का महत्त्व बताया। स्थानीय ज्ञानशाला संयोजक प्रदीप पुगलिया ने सभी का स्वागत किया। आंचलिक समिति के सदस्य संजय पारख ने संस्कारों का महत्व बताया। महिला मंडल अध्यक्ष चंद्रकांता पुगलिया, सभा के मंत्री बसंत पटावरी, आंचलिक संयोजिका डॉ. प्रेमलता चोरडिया, आंचलिक सहसंयोजिका निधि कोचर ने अपनी भावनाएं व्यक्त की।

सभी ज्ञानशाला के बच्चों ने अलग-अलग विषय पर प्रस्तुति दी। डॉ. प्रेमलता चोरडिया ने सभी ज्ञानशालाओं की सार संभाल की। सम्मान के क्रम में वरिष्ठ प्रशिक्षिकाओं का सम्मान किया गया। ज्ञानार्थी मनसा सेठिया जिसने जैन विद्या भाग 1 में राष्ट्रीय स्तर पर तृतीय स्थान प्राप्त किया और पूर्व ज्ञानार्थी कौशल भंसाली जिसने CA इंटर में 21वां रैंक प्राप्त किया, दोनों का सम्मान किया गया। वर्ष 2024 की शिशु संस्कार बोध परीक्षा के सर्टिफिकेट दिए गए एवं स्थानीय स्तर पर प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वालों को सम्मानित किया गया। सभा के उपाध्यक्ष मदन चंद नाहटा ने आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन स्थानीय सहसंयोजिका पंकज दुगड ने किया। कार्यक्रम में 97 ज्ञानार्थी, 31 प्रशिक्षिकाएं और 25 अभिभावकों की उपस्थिति रही।

❖ हर व्यक्ति के मन में कुछ होने की कामना हो। इसकेलिएकुछअपेक्षानुसारकठोरजीवनजीने का अभ्यास करना चाहिए। जीवन में प्रतिस्रोतगामिता रहे।

— आचार्य श्री महाश्रमण

❖ इन्द्रियाँ अपने आप में अशुभ नहीं होतीं। किंतु जब उनके साथ मोह का योग हो जाता है तो ये कर्मबंधन का कारण बन जाती हैं।

— आचार्य श्री महाश्रमण

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
14 अप्रैल - 20 अप्रैल, 2025

पैंसठिया छंद अनुष्ठान का आयोजन

हैदराबाद।

तेरापंथ युवक परिषद् हैदराबाद द्वारा डॉ साध्वी गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में सिकंदराबाद स्थित क्लासिक गार्डन में "पैंसठिया छंद महाअनुष्ठान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का विशेष आकर्षण स्वास्तिक के आकर में 71 जोड़ों का 2 घंटे से अधिक बैठकर इस छंद का जाप करना था। इस महाअनुष्ठान में 650 से अधिक सदस्यों ने भाग लिया। कार्यक्रम के दौरान आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या डॉ साध्वी गवेषणाश्री जी ने कहा कि मंत्रो में मंत्र, तंत्रो में तंत्र और यंत्रो में यन्त्र है- पैंसठिया छंद। जैन धर्म का यह प्रसिद्ध छंद हैं। इसमें विशेष रूप से 24 तीर्थंकरो की स्तुति की गई है। 1 से 24 तक के अंक का तात्पर्य है भरत क्षेत्र के इस अवसर्पिणी काल के चौबीस तीर्थंकरो की स्तुति एवं 25 अंक का तात्पर्य सीमंधर स्वामी का स्मरण। यह छंद बहुत ही प्रभवशाली और आकर्षक है। इसकी साधना मुख्य रूप से रवि पुष्य नक्षत्र के दिन करायी जाती है। यह महामंगलकारी, कल्याणकारी, संकटहारी और विघ्नहारी छंद है।

साध्वी मयंकप्रभाजी ने इस छंद की महिमा और विधि पर विशेष प्रकाश डाला। साध्वी दक्षप्रज्ञा ने मधुर स्वरों से पूर्ण सभा को सरोबार कर दिया। साध्वी मेरुप्रभा ने कुशलतापूर्वक कार्यक्रम का संचालन किया। कार्यक्रम में स्वागत व्यक्तव्य तेयुप मंत्री अनिल दुगर ने दिया और तेयुप हैदराबाद की भिक्षु प्रज्ञा मंडली ने मंगलाचरण की प्रस्तुति दी। इस कार्यक्रम के मुख्य संयोजक अरिहंत गुजरानी, शुभम बम्बोली, आदेश पिरोदिया, रीटा सुराणा और रेखा संकलेचा थे। कार्यक्रम के अंत में अध्यक्ष अभिनन्दन नाहटा ने सभी के प्रति आभार ज्ञापन करते हुए साध्वीश्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। जैन धर्म के कई मतों के श्रावक-श्राविकाओं ने इस अनुष्ठान में भाग लिया। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् की ओर से तपोयज्ञ के राष्ट्रीय प्रभारी जितेश पोकरना इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रुप में देवगढ़ (राजस्थान) से पधारे। श्री जैन सेवा संघ के वरिष्ठ उपाध्यक्ष सुभाष पिरोदिया और उपाध्यक्ष विनोद संचेती का कार्यक्रम में सम्मान किया गया। तेयुप संगठन मंत्री जिनेन्द्र बैद, सहमंत्री जिनेन्द्र सेठिया और कोषाध्यक्ष आशीष दक ने कार्यक्रम को सफल बनाने में अहम् भूमिका निभाई। कार्यकम में TKM TALKS के टीज़र का भी लांच किया गया। आयोजन में तेरापंथ महिला मंडल, हैदराबाद का विशेष सहयोग रहा।

पृष्ठ 1 का शेष

प्रभु के पथ पर...

पूज्यवर ने 'प्रभो! तुम्हारे पावन पथ पर जीवन अर्पण है सारा' गीत का मधुर संगान भी करवाया एवं कहा - यदि संकल्प दृढ़ हो, तो क्रांति की बात आगे बढ़ सकती है। शांति अच्छी है, पर जहाँ अपेक्षित हो, वहाँ क्रांति भी आवश्यक है। शांति के साथ संतुलित क्रांति की आवश्यकता है। निर्भीकता होनी चाहिए—व्यक्ति सत्य बोल सके, आवाज उठा सके—परन्तु झगड़ा न हो। जागरूकता आवश्यक है, क्योंकि यदि कोई जगाने वाला न हो, तो सोये हुए गंगा भी बहती चली जाती है।

आज रामनवमी भी है— रामराज्य की कल्पना अद्भुत है, पर उसका यथार्थ तभी संभव है जब कोई सजगता से कहने वाला भी हो। जैन दर्शन में भगवान राम को मोक्ष प्राप्त आत्मा माना गया है—वे एक सच्चे संत पुरुष थे।

भिक्षु स्वामी हमारे आद्य प्रवर्तक हैं। उनके निष्क्रमण के साथ ही अनेक कठिनाइयाँ जुड़ी रहीं—दीक्षा भी बगड़ी में, अभिनिष्क्रमण भी वहीं। कभी श्मशान में निवास करना पड़ा। भगवान महावीर के साथ उनके जीवन में अनेक समानताएँ देखने को मिलती हैं।

हम अपने आद्य प्रवर्तक को बारंबार सादर वंदन करते हैं। उनके जीवन में अनेकों प्रेरणादायक प्रसंग हैं। उनका साहस अद्वितीय था—विरोधों के सामने झुके नहीं, कठिनाइयों से हारे नहीं। केलवा में यक्षराज से भी नहीं घबराए। ऐसी विलक्षण साधना और तपस्या उनके जीवन की धरोहर है। उन्हीं के साहस और संकल्प से आज धर्मसंघ इतना आगे बढ़ पाया है।

तेरापंथ धर्मसंघ का 265वाँ वर्ष प्रारंभ हो चुका है। दस आचार्यों का गौरवमयी काल पूर्ण हो चुका है, और अब दूसरा दशक चल रहा है। हम आचार्य भिक्षु को बार-बार श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं और यह प्रार्थना करते हैं कि हमारे भीतर भी क्रांति की वह लौ सदा प्रज्वलित रहे। श्रद्धा, आस्था, आचार-निष्ठा और आगम-श्रद्धा हमारे जीवन का हिस्सा बनें। हमारी संकल्प-शक्ति दृढ़ बनी रहे, यही कामना है।

स्वागत के क्रम में अमृत शाह, दीपाली पारिख, यश पारिख, रमणीकभाई शाह, अरविन्दभाई डोशी तथा शांतिधाम आश्रम के संचालक युवराज द्वारा अपनी अभिव्यक्ति दी गई।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

संयम, सदाचार और...

गुरुजनों के प्रति श्रद्धा और विनय रखें, तथा सभी प्राणियों के प्रति करुणा और दया का भाव रखें। पूज्यवर ने कहा -

'तुलसी दया न पार की, दया आपकी होय।

तूं किण न मारे नहीं, तने न मारे कोय।।'

न्यायपूर्ण वृत्ति अपनाएं, ईमानदारी को जीवन में स्थान दें और दूसरों के आध्यात्मिक कल्याण की भावना रखें। परोपकार पुण्य है और परपीड़ा पाप। ज्ञान, धन, शक्ति, रूप या सत्ता का घमंड नहीं करना चाहिए और न ही उनका दुरुपयोग करना चाहिए। सत्संग और सत्साहित्य का संपर्क आत्मिक विकास के लिए आवश्यक है। संतों का दर्शन और संग ही अपने आप में दुर्लभ और पुण्यप्रद है। बुरी संगति से बचें और अच्छी संगति अपनाएं—उससे उत्तम संस्कार विकसित होते हैं।

84 लाख योनियों में मानव जीवन दुर्लभ है, उसका सदुपयोग करना चाहिए। कुछ लोग जीवन नैया को तट पर आकर भी डुबा देते हैं। इसलिए धर्म के मार्ग पर चलना आवश्यक है।

विद्यालयों में बच्चों को संस्कारयुक्त शिक्षा मिलनी चाहिए ताकि वे सुसंस्कारित नागरिक बन सकें।

पूज्यवर के स्वागत में वैभव शाह, पायल शाह, झंडाला के सरपंच पोपट भाई ठाकोर, अंबादान भाई गढ़वी, सरस्वती नगर स्कूल से भरत भाई मकवाणा एवं झंडाला प्राथमिकशाला के जीतूभाई पटेल ने अपनी भावनाएं व्यक्त कीं। कांतिभाई शाह और केशव भाई शाह ने भी अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

बोलती किताब

आदिम युग का आदमी

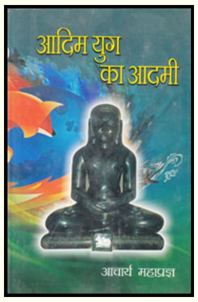

संपूर्णता का प्रतीक - भगवान ऋषभ का जीवन भारतीय संस्कृति और दर्शन का अद्वितीय उदाहरण है। यह केवल मोक्ष और धर्म तक सीमित नहीं, बल्कि समाज व्यवस्था, अर्थनीति, कला और शिल्प के विकास का भी प्रतीक है। उनके जीवन का प्रारंभ समाज की संरचना से हुआ और समापन आत्म-साधना एवं मोक्ष प्राप्ति के साथ। इसी कारण ऋषभ का जीवन संपूर्णता का दर्शन कराता है, जो प्रत्येक युग में प्रासंगिक बना रहेगा।

सृष्टि और जगत का रहस्य - भारतीय चिंतन में सृष्टि और जगत को समझने के दो दृष्टिकोण मिलते हैं—एक, यह जगत अनादि और अनंत है; दूसरा, सृष्टि सादि और सांत है। जैन परंपरा के अनुसार, यह विश्व स्वभाव से ही संचालित है, जिसका कोई सृजनहार नहीं। जीव और पुद्गल के संयोग से निर्माण संभव होता है, जो सृष्टि के रूप में प्रकट होता है। इस गूढ़ विषय को समझने के लिए कालचक्र के रहस्य को जानना आवश्यक है।

कालचक्र और परिवर्तन - काल की अवधारणा को जैन ग्रंथों में अत्यंत सूक्ष्मता से व्याख्यायित किया गया है। कालचक्र के बारह विभाजन, उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी कालखण्ड, सुख और दुःख के क्रमिक परिवर्तन को स्पष्ट करते हैं। वर्तमान युग अवसर्पिणी के उस चरण में है, जहाँ सुख की मात्रा न्यूनतम होती जा रही है। प्राचीन काल में पदार्थों की पोषण शक्ति इतनी अधिक थी कि मनुष्य अल्प आहार में भी दीर्घायु होता था, जबकि आज पर्यावरणीय परिवर्तन के कारण स्थिति भिन्न हो गई है।

ऋषभ: समाज और आत्मा के पथप्रदर्शक - भगवान ऋषभ का जीवन इस सृष्टि के व्यापक रहस्यों को समझने की कुंजी प्रदान करता है। जैसे राम भारतीय सभ्यता में एक आदर्श पुरुष के रूप में स्थापित हुए, वैसे ही ऋषभ समाज निर्माण और आत्म-साक्षात्कार के अद्वितीय मार्गदर्शक माने जाते हैं। उनके जीवन पर आधारित अनेक ग्रंथों, जैसे ऋषभायण, आदिपुराण और महापुराण में उनके व्यक्तित्व का विस्तृत वर्णन किया गया है। यह ग्रंथ भगवान ऋषभ के जीवन के विविध आयामों को प्रस्तुत करने का प्रयास है। इसमें उनकी सामाजिक, आध्यात्मिक और दार्शनिक भूमिका का समावेश किया गया है, ताकि पाठक केवल उनके जीवन को जानने तक सीमित न रहें, बल्कि उससे प्रेरणा लेकर अपने जीवन को भी एक नई दिशा दे सकें। ऋषभ का जीवन केवल अतीत का नहीं, बल्कि भविष्य की भी आधारशिला है।

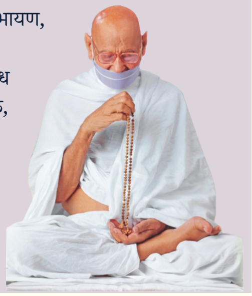

पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क करें :
आदर्श साहित्य विभाग जैन विश्व भारती
+91 87420 04849 / 04949 https://books.jvbharati.org books@jvbharati.org

ज्ञानशाला का त्रिदिवसीय समर कैंप का आयोजन

कांटाबांजी।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, कांटाबांजी के तत्वावधान में स्थानीय तेरापंथ भवन में 5 वर्ष से 16 वर्ष तक के बच्चों का त्रिदिवसीय समर कैंप का आयोजन किया गया।

प्रतिदिन 8 घंटे से अधिक चलने वाले इस कैंप में बच्चों के बौद्धिक, धार्मिक, सामाजिक विकास के साथ मनोरंजन के लिए भी सत्र कराये गये। योग, प्राणायाम, जुम्बा, कलरिंग, ड्राइंग, क्राफ्ट्स मेकिंग, ग्रुप परफॉर्मेंस, ग्रुप गेम्स आदि एक्टिविटीज कराई गई। डॉ. यश जैन द्वारा पढाई एवं एकाग्रता जैसे विषयों पर प्रशिक्षण दिया गया। परी अग्रवाल ने बच्चों को योग के प्रयोग करवाए। सभी बच्चों को सामूहिक संकल्प भी करवाये गए, जैसे - खाना झूठा नहीं छोड़ना, कचरा नहीं फैलाना, झूठ नहीं बोलना, मोबाइल - टीवी का सीमित उपयोग करना आदि। कैंप में 140 बच्चों ने भाग लिया। स्थानीय सभा, तेरापंथ महिला मंडल, कन्या मंडल, तेरापंथ युवक परिषद के कार्यकर्ताओं के परिश्रम से समर कैंप सुचारू रूप से संपादित हुआ।

जीवन में ज्ञान और साधना का हो विकास : आचार्यश्री महाश्रमण

आडेसर।
2 अप्रैल, 2025

जिनशासन सरताज आचार्यश्री महाश्रमणजी मोडा से लगभग 13 किमी का विहार कर आडेसर पधारे। अमृत देशना प्रदान कराते हुए पूज्यवर ने फरमाया कि हमारे जीवन में ज्ञान का बहुत महत्व है। जगह-जगह शिक्षालय मिलते हैं, ये संस्थान ज्ञान प्रदान के माध्यम है। अनेकों विद्यार्थी ज्ञान का आदान करते है और अनेकों शिक्षक ज्ञान को प्रदान करते हैं।

शास्त्र में कहा गया है - सदा स्वाध्याय में रत रहो। जितना समय हो यथासंभवतया रोज स्वाध्याय करें। ज्ञान एक पवित्र तत्व है। ज्ञान दो प्रकार के हो सकते हैं - अध्यात्म विद्या का ज्ञान और लौकिक विद्या का ज्ञान। ज्ञान दोनों ही उपयोगी हैं। ज्ञान में आगे बढ़ना है तो आदमी अपने अज्ञान को भी पहचानने का प्रयास करें। अज्ञान को पहचानने वाला ही सबसे बड़ा ज्ञानी है। दुनिया में अनेक संत-व्यक्तित्व ज्ञानी मिल सकते हैं। अलग-अलग विषयों के विशेषज्ञ मिल सकते हैं।

केवलज्ञान होने पर अज्ञान बिलकुल ही नहीं रहेगा। ज्ञान ज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से प्राप्त होता है। अज्ञान को भी क्षयोपशम कहा गया है। अज्ञान भी दो प्रकार का होता है - एक ज्ञानावरणीय कर्म के उदय से होने वाला और दूसरा ज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से होने वाला। मति, श्रुत और विभंग अज्ञान ज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से होने वाला, उज्जवलता से मिलने वाला अज्ञान है। यहां ज्ञान का अभाव नहीं है। ये तो मिथ्यात्वी के पास है, इसलिए अज्ञान संज्ञा कहा गया है।

> **नौवां बोल : उपयोग बारह**
>
> **पांच ज्ञान—** मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मन:पर्यवज्ञान, केवलज्ञान।
>
> **तीन अज्ञान—** मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान, विभंग अज्ञान।
>
> **चार दर्शन—** चक्षु दर्शन, अचक्षु दर्शन, अवधि दर्शन, केवलदर्शन।

ज्ञानावरणीय कर्म के उदय से होने वाला अज्ञान है, वहां ज्ञान का अभाव है। जैसे सम्यक्त्वी है, उसमें ज्ञान तो है पर केवलज्ञान का, मनः पर्यव ज्ञान, अवधिज्ञान का अभाव है। केवलज्ञान हो गया तो सम्पूर्ण ज्ञान हो गया। अज्ञान का अंधकार कम हो और ज्ञान का प्रकाश बढ़ता रहे और इसके लिए सदा स्वाध्याय में रत रहें। ग्राहक बुद्धि से, समीक्षात्मक बुद्धि से पढ़ने का, स्वाध्याय करने का प्रयास करें तो ज्ञान और क्लीयर हो सकता है। तर्क और प्रश्न हो तो ज्ञान और खुल सकता है।

अनेक ग्रन्थों में तत्व ज्ञान भरा है। ज्ञान एक प्रकाश है, अज्ञान अंधकार है। विद्या खुद सरस्वती है। साधु के तो ज्ञान और साधना धन है। तप, योग साधना, उपशम की साधना धन है, परिग्रह का भार कम हो जाये। आचार्यश्री ने सेवा साधक श्रेणी के संदर्भ में प्रेरणा देते हुए कहा कि सेवा के साथ साधना को ही अपना आभूषण बनाने का प्रयास करें। इस श्रेणी के लोग सेवा और साधना का विकास करते रहने का प्रयास करें। हमारे जीवन में ज्ञान और साधना का विकास हो यह काम्य है।

पूज्यवर के स्वागत में आडेसर कुमार शाला के प्रिंसिपल महेन्द्र भाई ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

आस्था से कम हो सकती है विचार और आचार की दूरी : आचार्यश्री महाश्रमण

मोडा।
1 अप्रैल , 2025

भैक्षव शासन सम्राट आचार्यश्री महाश्रमणजी अपनी धवल सेना के साथ लगभग 12 किमी का विहार कर फतहगढ़ से मोडा की प्राथमिक शाला में पधारे। आस्था के महासागर आचार्य प्रवर ने मंगल देशना प्रदान कराते हुए फरमाया कि हमारे जीवन में श्रेयस्कर क्या है ? और अहितकर क्या है ? इस पर हमारा ध्यान जाना चाहिए - कौन से कार्यों, आचरणों, और विचारों से आत्मा का कल्याण हो सकता है ? कौन से विचारों-आचारों से आत्मा का पतन-नुकसान हो सकता है।

व्यक्ति सद्विचार और सदाचार रखे। दुर्विचार और दुराचार आत्मा के लिए नुकसानदायी होते हैं। विचार और आचार का भी एक संबंध होता है। आदमी की विचारधारा, सिद्धान्त अच्छे होते हैं तो आचरणों में भी वैसा प्रभाव पड़ सकता है। आस्था अच्छी है तो आचार अच्छा हो सकता है। आस्था ठीक नहीं है तो विचार अलग तरह का होगा।

सद्विचार है तो सदाचार का मार्ग अच्छा बन सकता है। व्यक्ति का दर्शन सम्यग् रहे। फिर सम्यग् ज्ञान और सम्यग् चारित्र हो सकता है। सम्यग् दृष्टिकोण से व्यक्ति जान सकता है कि कर्म बुरे करेंगे तो उनका फल भी बुरा होगा। जीवन में सम्यक्त्व है तो एक बड़ी सम्पति मिल गई। गृहस्थ को सांसारिक काम भी करने पड़ते हैं पर दृष्टिकोण सही है तो वह बुरे काम करने से बचेगा। महाव्रतों की साधना न हो सके पर अणुव्रतों का पालन करें। भावना है तो यहां नहीं तो आगे दीक्षा आ सकती है।

परिग्रह के प्रति आसक्ति और परिवार के प्रति मोह को कम करें। आसक्ति और मोह की भावना कर्म बन्ध कराने वाले हैं। जीवन में संयम रखें, स्वाद और विवाद में ज्यादा नहीं जाना चाहिये। अस्वाद और संवाद करें। सिद्धान्त और धार्मिक चर्चा करें, फालतू विवाद न करें। दृष्टिकोण, विचार और आस्था अच्छी है तो जीवन में अच्छे रूप में परिवर्तन हो सकता है। मानव जीवन मिला है, इससे धर्म का उत्थान, धर्म की साधना करे। आत्मा के कल्याण की दिशा में आगे बढ़ें।

पूज्यवर के स्वागत में मोडा जैन संघ से वाड़ी भाई मेहता, मोडा प्राथमिक शाला से जितेन्द्र भट्ट ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
14 अप्रैल - 20 अप्रैल, 2025

समर्थ शरीर से हो सकती है उत्कृष्ट साधना : आचार्यश्री महाश्रमण

सांतलपुर।
4 अप्रैल, 2025

संयम के सुमेरू, आचार्यश्री महाश्रमणजी लगभग 12 किलोमीटर का विहार कर सांतलपुर स्थित मॉडल स्कूल में पधारे।

शांतिदूत ने अमृतमय देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारे जीवन में आत्मा तो मूल तत्व है ही, परन्तु शरीर का भी उसमें महत्त्वपूर्ण योगदान है। जब तक शरीर जीवित है, तभी तक जीवन है। इसी शरीर के माध्यम से हम श्रेष्ठ कार्य कर सकते हैं।

धर्म और अध्यात्म की साधना भी इसी शरीर द्वारा संभव है। दूसरों की सेवा भी शरीर से की जा सकती है। शरीर और मन दोनों ही साधना के साधन हैं। यदि हम शरीर से उत्तम कार्य करना चाहते हैं, तो उसका सक्षम और स्वस्थ रहना आवश्यक है।

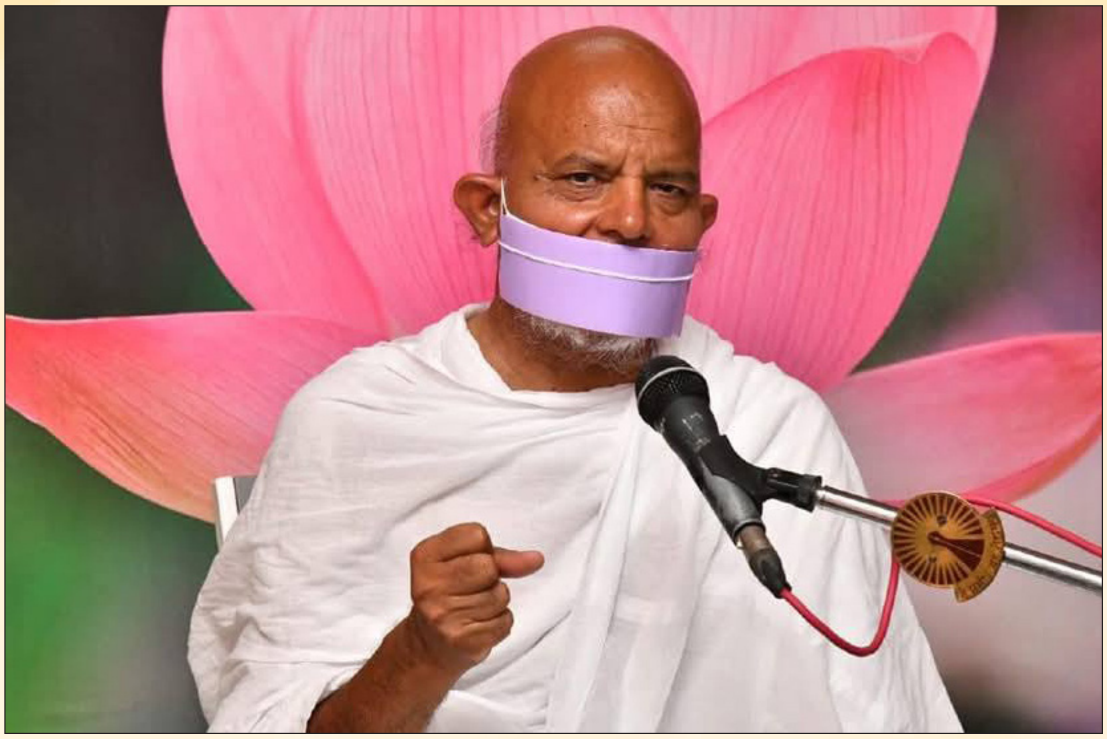

शास्त्रों में शरीर की समर्थता को बनाए रखने हेतु तीन प्रमुख बाधाओं से सावधान रहने की बात कही गई है—बुढ़ापा, बीमारी और इन्द्रियों की क्षीणता। जब तक बुढ़ापा पीड़ित न करे, बीमारियाँ न घेरें और इन्द्रियाँ दुर्बल न हों, तब तक धर्म का आचरण कर लेना चाहिए। केवल आयु से बुढ़ापा नहीं आता, अनेक बीमारियाँ लाइलाज हो सकती हैं। दृष्टि कमजोर हो सकती है या श्रवण शक्ति क्षीण हो सकती है।

विद्यार्थियों को लौकिक और व्यावहारिक ज्ञान के साथ-साथ आध्यात्मिक ज्ञान भी प्रदान किया जाना चाहिए। ध्यान के प्रयोग कराए जाने चाहिए। नैतिकता और नशा-मुक्त जीवन के मूल्य विद्यार्थियों में आत्मसात हों। सफलता का पौधा परिश्रम रूपी जल से सींचा जाता है। जो कुछ भी प्राप्त करना है, वह श्रम के द्वारा ही संभव है। विद्यार्थियों को मेहनत से अंक अर्जित करने चाहिए, न कि किसी अवैध या अनुचित तरीके से।

विद्यार्थियों का केवल ज्ञान ही नहीं, अपितु उनका चरित्र और आचरण भी उत्तम होना चाहिए। बिना आचरण के ज्ञान अधूरा है। जब दोनों हों, तभी ज्ञान पूर्ण होता है। ईमानदारी एक श्रेष्ठ नीति है। शिक्षक, गुरु स्वरूप होता है, जो अंधकार को दूर करता है। जैसे शिक्षक उत्तम हों, वैसे ही विद्यार्थियों का भी श्रेष्ठ होना आवश्यक है। प्रयासों द्वारा विद्यार्थियों में उत्तम ज्ञान और संस्कारों का विकास संभव है।

साधुओं का आगमन और दर्शन स्वयं में एक विशेष अवसर होता है।

सुत, दारा अरू लक्ष्मी, पापी के भी होय,
संत समागम-हरिकथा, तुलसी दुर्लभ दोय।'

भारत में संत परम्परा एक अनमोल धरोहर है। यह भारत का सौभाग्य है कि यहाँ त्यागी संतों का जन्म होता है, जो समाज का कल्याण करते हैं। गृहस्थों में भी कई संततुल्य श्रेष्ठ पुरुष मिल सकते हैं, जो साधना में रत रहते हैं। हमें अपने जीवन में धर्म का आचरण अवश्य करना चाहिए—यही हमारी सच्ची कामना हो।

पूज्यवर के स्वागत में मॉडल स्कूल, सांतलपुर के प्रिंसिपल नेहलभाई रावल ने अपनी भावनाएँ व्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

आचार्यश्री महाश्रमण : चित्रमय झलकियां

विद्यार्थियों को बोध पाठ प्रदान कराते पूज्य प्रवर

रामनवमी के उपलक्ष में निकलने वाली रथयात्रा के साथ पूज्य गुरुदेव के दर्शनार्थ पहुंचे ग्रामवासी

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै.जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित।